लौहपुरुष पटेल

(अंगिका प्रबंध काव्य)

हीरा प्रसाद ''हरेन्द्र''

चन्द्रकान्ता प्रकाशन, कटहरा

कृति : लौहपुरुष पटेल
(अंगिका प्रबंध काव्य)

कृतिकार : हीरा प्रसाद हरेन्द्र

महामंत्री : अखिल भारतीय अंगिका साहित्य कला मंच

प्रकाशन वर्ष : 2019

शब्द संयोजन व मुद्रणः गीता प्रिंटिंग प्रेस
श्री गणपति प्लाजा, खलीफाबाग
भागलपुर
मो० : 9430088362

सहयोग राशि : 100/-

सम्पर्क :
ग्राम+पो०-कटहरा,भाया-सुलतानगंज,
जिला-भागलपुर (बिहार)813213
Mob. : 9931854246

LAUHPURUSH PATEL (PRABANDH KAVY)
By *Hira Prasad 'Harendra'*

समर्पण

सुयोग्यता, प्रवीणता, सहिष्णुता, कर्मठता, कार्यकुशलता, वाणी में मधुरता, वाक्पटुता, समय के पावंदिता जैसनों अनेक सद्गुणों के संवाहक मुरारका महाविद्यालय, सुलतानगंज के प्राचार्य साथें एन.सी.सी. के ए.एन.ओ. प्रो. (डॉ.) अमर कान्त सिंह कें अंगिका प्रबंध काव्य के रूप में प्रणीत ई सातवाँ सुमन ''लौहपुरुष पटेल'' समर्पित।

बहुआयामी व्यक्तित्व के विशेषण अनेक गुणी लोगों के साथ लगैलों जाय छै किंतु ई विशेषण के प्रयोग करला पर भी लागै छै कि कदाचित एकरा सें भी ज्यादा व्यक्त करै वाला कोय आरू शब्द होतियै तें वहें लिखतियै, मगर ऊ शब्द सूझथैं नैं छै।

बिडम्बना

भारत के प्राचीन इतिहास सागर कें निरपेक्ष होय कें मथला पर ई जानी कें बड़ा दुख होय छै कि हम्हीं गुलाम रहलियै, हमरों पूर्वज तें कितना देश के अधिपति छेलै। हम्हीं रूढ़िवादी छियै, पूर्वज अत्यन्त उदार छेलै। हम्हीं मूर्ख छियै, वें संसार भर कें शिक्षा बाँटै छेलै। हम्हीं दरिद्र छियै, उनी सब प्रतिदिन सोना के थाल में भोजन करै रहै। हम्हीं फूट के ज्वाला में जलै छियै, उनकों संगठन के लोहा संसार मानै छेलै। अनन्त काल सें पुण्य सलिला भागीरथी परम पवित्र भारत भूमि के वक्षस्थल कें धोतें होलों आरू दुर्बल प्रकृति मनुष्य के पापों कें अपना में विलीन करतें होलों बही रहलों छै, जकरों उपजाऊ घाटी में अपनों सभ्यता के विकास करी आर्य संसार कें चकित करनें छेलै।

नियति के चक्र, समय के करिश्मा आरू परिस्थिति के फेर ककरा कहिया कहाँ पहुँचाय देतै, कहना मुश्किल छै। परिवर्त्तन शास्वत सत्य छै। देश गुलामी के जंजीर में जकड़लै। भारत माता के सपूत इतिहास के पन्ना कें उलटलकै आरू विदेशी सत्ता कें उलटाबैलें आतुर होय गेलै। अठारहवीं सदी में संग्राम शुरू होलै। डिग्गन, शिब्बू, तिलकामाँझी तीन पुस्त लड़लै आरू शहीद होय गेलै। झांसी के रानी, वीर कुँवर सिंह के गाथा कें के नैं जानै छै। गाँधीजी सत्य-अहिंसा के हथियार हथियैनें आखिर अंग्रेजों कें सात समुद्र पार करी छोड़लकै।

स्वतंत्रता संग्राम में पटेल आरू नेहरू एक साथे कुदलै आरू गाँधी जी के क्रमशः दायाँ-बायाँ हाथ बनलों रहलै। गाँधीजी में पद लोलुपता नैं छेलै। गाँधीजी भाई-भतीजावादी नै छेलै, मगर अपनों आरू अपनों कृपा पात्रों के वर्चस्व रक्षण लेली सतत् प्रयत्नशील रहै छेलै। पटेल कें पीछू ठेली नेहरू कें काँग्रेस अध्यक्ष बनवाना आरू 46-47 में वहींनाँ बहुमत के अवहेलना करी नेहरू कें प्रधानमंत्री बनवाना, गाँधीजी

के नेहरू पक्षपात आरू पटेल हितघात के दू सशक्त उदाहरण छेकै। अगर पटेल प्रधानमंत्री होतियै तें भारत के नक्शा कुछ आरू होतियै।

मौलाना आजाद कृत आरू हुमायूँ कबीर द्वारा अनूदित 'इण्डिया वीन्सफ्रीडम' पुस्तक सें लें कें डॉ0 राम मनोहर लोहिया कृत 'द गिल्टी मैन ऑफ इण्डियाज पार्टीशन' तक अनेक ग्रंथ स्पष्ट करै छै कि गाँधी भारत के विभाजन नैं चाहै छेलै। मगर राजनीति में सत्य के समग्र पालन असंभव प्राय होय छै, नैं तें तुलसीदास के चौपाई 'रघुकुल रीति सदा चली आई। प्राण जाई पर वचन न जाई' कें बार-बार उधृत करै वाला 'पाकिस्तान मेरी लाश पर बनेगा' के वचन कें सरलता सें बेकार नैं जाबें देतियै। नियति उनका सत्यवीर आरू प्रणवीर नै बनें देलकै। उनी अजर-अमर दशरथ के प्रतीक नैं बनी कें वचन गेल्हौ पर जीवित रहलै।

संसद भवन में महान व्यक्ति या नेता के चित्र टाँगै के चलन छै। आश्चर्य तें ई सुनी कें होय छै कि सरदार पटेल के चित्र पूर्व प्रधानमंत्री अटल जी के कार्यकाल में टाँगलों गेलै। पटेल जी नेहरू के समकालीन बल्कि उम्र में बड़े छेलै। बिडम्बना कहियै उनकों नाती राजीव गाँधी के बाद पटेल जी कें भारतरत्न उपाधि सें सम्मानित करलों गेलै।

'सरदार' आरू 'लौह पुरुष' के उपाधि सें सुसज्जित पटेल जी के जीवन में भय के कोय स्थान नैं छेलै। वक्त के प्रवाह कें अहिनों मोड़ै कि प्रतिकूलता टकराय कें चकनाचूर हो जाय। शालीनता आरू तेजस्विता के अनूठा समन्वय वाला व्यक्तित्व के की कहना पत्नी के देहांत के खबर सें तनिक बिचलित नैं होना आरू जेल सें रिहाई के खातिर रखलों शर्त कें ठुकराय भाई के अंत्येष्ठि में शामिल नैं होना एक मिसाल प्रस्तुत करै छै।

सरदार बल्लभभाई पटेल पर प्रबंध काव्य लिखै लेली डॉ0 अमरेन्द्र द्वारा प्रेरित होला पर सामग्री लेली दूरदर्शन आरू ढेरी संदर्भ ग्रंथ

के सहारा लेलियै। सुधीर कुमार प्रोग्रामर इण्टरनेंट सें उनकों जीवनी निकाललकै आरू डॉ0 ब्रह्मदेव नारायण सत्यम धरलों-उसारलों पेपर के कतरण खोजी-खाजी कें आगू करलकै। एकरा सें काव्य में कुछ अहिनों तथ्य कें समाहित करें पारलियै जकरा सें जन साधारण अनभिज्ञ छेलै।। अनमोल सहयोग लेली ई सब के प्रति कृतज्ञता आरू आभार हल्का पड़ी जाय छै। नन्हा नैतिक तें प्रूफरीडिंग करतें पन्ने फाड़ी कें प्रकाशन लेली धड़फड़ाय देलकै।

पटेल के कहीं 16 वर्ष में तें कहीं 18 वर्ष में विवाह। कहीं झबेर भाई के चार पुत्र के चर्चा तें कहीं पाँच पुत्र आरू एक पुत्री के चर्चा। भाई के नाम सोभाभाई, इनको बेटी के नाम मणिबेन तें कहीं मणिबहन पटेल (मणिबहन लिखै वाला रावजीभाई पटेल, पटेल जी के जेरों छेलै। संभव छै यहें सही हुवें) तें कहीं सोभाभाई, कहीं नरसी भाई तें कहीं नरसिंह भाई। अंतर सें उत्पन्न अंतर -द्वन्दता कें टारी-टारी सफलता प्राप्ति में कतना सफल होलियै, ई निर्णय के भार पाठक पर देतें होलों अपनों लेखनी कें विराम दै छियै।

कहाँ की छै:

पहिला सर्ग : भारत महिमा, विषय प्रवेश

दूसरा सर्ग : गाँव, परिवार परिचय आरू जन्म, शिक्षा, विवाह, वकालत, मणिवेन आरू डाहया भाई के जन्म, पत्नी के बीमारी, पत्नी के निधन।

तीसरा सर्ग : पटेल-नेहरू स्वतंत्रता संग्राम में, झण्डा सत्याग्रह आन्दोलन, मुंडकर आन्दोलन, बारडोली सत्याग्रह, सरदार की उपाधि, सत्याग्रह के दायित्व

चौथा सर्ग : अहिंसा विरोधी सुभाष, गाँधी-इरविन समझौता, भगतसिंह कें फाँसी

पाँचवाँ सर्ग : द्वितीय विश्व युद्ध, जिन्ना के मनसूबा, मुस्लिम लीग, देशों के बँटवारा, गाँधी जी के नेहरू प्रेम, नेहरू प्रधानमंत्री, उपप्रधानमंत्री पटेल।

छठा सर्ग : देशी रियासत के एकीकरण, लौह पुरुष, कश्मीर समस्या।

सातवाँ सर्ग : सोमनाथ मंदिर निर्माण, बापूजी निर्वाण, पटेल की स्थिति दयनीय, दिल के दौरा, निधन।

आठवाँ सर्ग : पटेल दर्शन, उपसंहार।

नौवाँ सर्ग : पटेल के उपदेश, परिशिष्ट।

सर्ग-एक

चार वेद छौं शास्त्र, अठारह
पुराण छै छिरियैलों।
धर्म ग्रंथ के पन्ना बोचें,
सगर गान छै गैलों।। 1।।

राम-कृष्ण के ई धरती पर,
देवो आना चाहै।
जकरा नसीब नहियें होलै,
ऊ तें मन-मन आहै।।2।।

शापित होला पर जे आबै,
वोहो हर्ष मनाबै।
लौटै अपनों धाम वहाँ सें,
आबै लें ललचाबै।।3।।

स्वर्ग जहाँ पर लगै उतरलों,
स्वर्गो अहिनों सुविधा।
धन्य-धन्य भारत हमरों ई,
जरा कहीं नैं दुविधा।।4।।

सोना उगलै वाली धरती,
भारत के कहलाबै।
भारत केरों गौरव गाथा,
वेद-पुराणें गावै।।5।।

शकुन्तला-दुष्यन्त पुत्र जब,
पाँच बरस के छेलै।
बाघों बच्चा मुँहें अंगुली,
डालै साथें खेलै।।6।।

वोही बालक वीर भरत के,
नामों पर छै भारत।
सब्भे छेलै सुखी यहाँ पर,
जरा कहीं नैं आरत।।7।।

काल चक्र कुछ उल्टा चललै,
गुलाम भारत होलै।
मुगलकाल सें अंग्रेजों तक,
जहरे खाली घोलै।।8।।

अंग्रेजों के अत्याचारों
सें भारत घबड़ैलै।
हिमवानों के उच्चों माथा,
देखी कें चकरैलै।।9।।

हिन्द महासागर के लहरो,
कुहरै छेलै खाली।
गंगा बोलै अंग्रेजें तें,
छीनौ सोना थाली।।10।।

दिशा-दिशा गर्राट करै जब,
भारत वासी कानै।
अंग्रेजों सें लोहा लेना,
काम जरूरी मानै।।11।।

डिग्गन, शिब्बू, तिलका माँझी,
झाँसी वाली रानी।
सब्भै साथें करतें रहलै,
अंग्रेजें मनमानी।।12।।

कुँवर सिंह कें सब्भैं मानै,
बड़ा वीर मर्दाना।
आजादी के लौ के लेली,
सब छेलै परवाना।।13।।

तिलक, गोखले, बापू अहिनों,
नेता आगू आबै।
'आजादी अधिकार हमारा'
सब्भैं गाना गाबै।।14।।

राजेन्दर-वीर जवाहर भी,
वै में तान मिलाबै।
भगत सिंह, बटुकेश्वर, विस्मिल,
नारा खूब लगाबै।।15।।

चन्द्रशेखर, सुभाष जरा नै,
चुप्पी साधै वाला।
स्वच्छ हृदय सब्भै के छेलै,
कहीं जरा नैं काला।।16।।

वल्लभभाई पटेल छेलै,
गाँधी जी के साथें।
बड़का-बड़का काम करलकै,
जौनें अपनाँ हाथें।।17।।

राजनीति में बड़ी निपुणता,
देश भक्ति अपनाबै।
सोचै भीष्म पितामह अहिनों,
गंगा रं घहराबै।।18।।

इनकों त्यागों केरों गाथा,
दुनिया हरदम गाबै।
रहै किसानों केरों बेटा,
सफल किसान कहाबै।।19।।

कूशों के नोंकों रं चिन्तन,
ख्याति धरा पर छैलों।
दोस्त रहै या दुश्मन राखै,
बात खूब समझैलों।।20।।

बरसाबै अंगार नयन सें,
प्रतिवादी थर्राबै।।
जकरा चलतें वल्लभभाई,
लौहपुरुष कहलाबै।।21।।

गलत काम कोनों देखी कें,
ठनकै जिनकों माथा।
शब्दों में बाँधै के कोशिश,
उनको जीवन गाथा।।22।।

❖

सर्ग-दू

धन्य-धन्य भारत सदा, धन्य-धन्य गुजरात।
चलै जहाँ पर रात-दिन, राजनीति के बात।।1।।
आजादी के आग में, कूदै वाला ढेर।
रहै वहाँ के आदमी, कहना नैं अंधेर।।2।।
एक ताल्लुका बोरसद, वहीं करमसद ग्राम।
गुजरातों के गोद में, धर्मों के ऊ धाम।।3।।
खेड़ा कहलावै जिला, भारत केरों भाग।
सज्जनता भरलों रहै, जरा द्वेष नैं राग।।4।।
कुरमी क्षत्रिय जाति के, बहुतायत गुजरात।
लेवा, कदवा दू तरह, वोही में उपजात।।5।।
पुरुषोत्तम श्रीराम के, वंशज मानै कोय।
लव सें लेवा जाति फिर, कुश सें कदवा होय।।6।।

लेवा पाटिल नाम के, गुजराती परिवार।
उनकों खेती ही रहै, जीवन के आधार।।7।।
उपजाऊ धरती बड़ी, बंजर भी कुछ अंश।
बगुला केरों बास भी, जहाँ बसै छै हंस।।8।।
लेवा के परिवार में, छेलै जकरों मान।
झबेरभाई नाम के, वोहो सफल किसान।।9।।
पाटीदार रहै लेवा के, पूर्वज इनको भाय।
बस येही लेली खनदानें, सब पटेल कहलाय।।10।।
किसान पेशा सें रहै, देख इक सम्प्रदाय।
आत्म शुद्धता बासतें, लेलक झट अपनाय।।11।।
नारायण नामाकरण, सम्प्रदाय के जान।
सत्य-चित्त-आनंद के, वहाँ सदा गुणगान।।12।।
देश भक्ति के जब कथा, कहै सुनै छै कोय।
बीस बरस के उम्र में, सेना साथें होय।।13।।
लक्ष्मी बाई सें मिली, करै प्रथम संग्राम।
रहलै तखनी कैद में, जानी लें अंजाम।।14।।
लाड़बाई, झबेर के, होलै साथ विवाह।
भरलै दोनों के हृदय, एक रंग उत्साह।।15।।
रहै लाड़बाई सदा, सब सुख के आधार।
करै ईश आराधना, व्रत-पूजा-त्योंहार।।16।।
धन-संपत सुख शांति सें, बढ़लों जे कुछ चाह।

बच्चा खेलै गोद में, ई सुख के नै थाह।।17।।
पूजा के प्रतिफल कहों, या होनी के चाल।
लाड़बाई झबेर घर, ऐलै सुन्दर लाल।।18।।
सुत सोभाभाई प्रथम, बदलै घर-संसार।
नरसिंह भाय दोसरों, भी मिललै उपहार।।19।।
विट्ठल भाई तेसरों, घर में भरै उमंग।
खेलै-धूपै में करै, सब लोगों कें तंग।।20।।
पर मैया के चाह में, कमी करै जगदीश।
मैया चौथों पुत्र लें, फनूँ झुकाबै शीश।।21।।
शुभ्र सदी उन्नीसवीं, अंग्रेजों के राज।
दसक कहावै आठवीं, बदलैं लगलै साज।।22।।
ईस्वी पचहत्तर रहै, फैलै दिव्य प्रकाश।
संभव लागै माय के, पूरा होलै आश।।23।।
अक्टूबर इकतीस कें, पूरै माँ के ख्वाव।
वल्लभभाई के हुवै, जग में प्रादुर्भाव।।24।।
अग्रज इनकों तीन ठो, छोटों रहै पटेल।
बचपन सें ही रात-दिन, खेलै अद्भुत खेल।।25।।
नाना घर नड़ियाद में, जन्म समय के बात।
हर्षोल्लासों सें मनै, जन्मोत्सव दिन-रात।।26।।
कुछ दिन बादें जब अनुज, काशीभाई आय।

तब पुत्री के लालसा, गेलै हृदय समाय।।27।।
पाँच पुत्र के बाद तब, पुत्री भरलक गोद।
पूरा घर-परिवार में, झलकै मंगल-मोद।।28।।
डाहीबा छोटी बहिन, पाँच भाय के संग।
कानै-खीजै भाय कें, करै हमेशा तंग।।29।।
लाड़बाई झबेर कें दें पूरा संतान।
गेली कालों गाल में, पहली निस्संतान।।30।।
पढ़ै-लिखै केरों समय, तब होलै अनुमान।
शिक्षा पर परिवार के, गेलै तखनी ध्यान।।31।।
घर पर विद्या अध्ययन, कहें सकों स्वाध्याय।
नैं मतलब विद्यालयी, शिक्षा केरों भाय।।32।।
लेकिन शिक्षा उच्च लें, विद्यालय के नाम।
डिग्री तें अनिवार्य छै, सरकारी जे काम।।33।।
विद्यालय में नाम तब, गेलै फनूँ लिखाय।
पर द्वारी पर बैठ नित, करै सदा स्वाध्याय।।34।।
पढ़ै-लिखै केरों लगन, बल्लभ में पुरजोर।
बढ़िया पुस्तक जे रहै, उलटै भोरमभोर।।35।।
विद्यालय में छात्र के, नेता वाला काम।
घड़ी-घड़ी अन्याय के, होलै चक्का जाम।।36।।

बेमतलब के बात जब, शिक्षक के भी होय।
संभव कहाँ पटेल सें, राखी लेतै गोय।।37।।
घण्टी बजतें एक दिन, कक्षा खाली पाय।
ऑफिस देखै जाय कें, शिक्षक गप्प लड़ाय।।38।।
करलक कुछछू देर तक, इन्तजार सब शिष्य।
वल्लभभाई सोच में, देखै सदा भविष्य।।39।।
छेलै कुछ्छू छात्र जे, गाना के शौकीन।
गाबें लगलै गीत जब, सब्भे होलै लीन।।40।।
कार्यालय के द्वार तक, पहुँचै जब आवाज।
शिक्षक केरों क्रोध सें, होलै गरम मिजाज।।41।।
क्रोधों केरों आग में, छिड़कै नमक पटेल।
शिक्षक समझै एकरे, छेकै सब्भै खेल।।42।।
कक्षा सें बाहर करै, निकलै जहाँ पटेल।
बाहर होलै छात्र सब, देखों जादू खेल।।43।।
हारी गेलै गुरुजनो, गलती के आभास।
अनुचित कोनों काम के, आवश्यक परिहास।।44।।
छोड़ी कें संस्कृत विषय, गुजराती पर ध्यान।
पटेल जखनी देलकै, शिक्षक मारै तान।।45।।
सब्भे हिन्दू छात्र लें, संस्कृत छै अनमोल।
जे यै सें मुँह मोड़तै, ऊ सचमुच बकलोल।।46।।

कहै पटेलें मान्यवर! अदभुत छै ई बात।
गुजराती जे त्यागतै, ऊ त्यागें गुजरात।।47।।
गुजराती भाषा हितें, भेजलखों सरकार।
गुजराती सब त्यागतै, तोरों की दरकार।।48।।
पटेल जी के बात सें, शिक्षक में आक्रोश।
खड़ा करै तब बेंच पर, तइयो नैं संतोष।।49।।
कड़ी सजा दै बाद में, गेलै तब घबड़ाय।
बापों के शिक्षा रहै, मत सहना अन्याय।।50।।
प्रकाशकों सें बातकर, पूरी करी हिसाब।
अध्यापक हर वर्ग के, खरीदै सब किताब।।51।।
बेचै बेशी दाम पर, छात्र रहै मजबूर।
पटेल सब्भे योजना, करलक चकनाचूर।।52।।
करै इकट्ठा छात्र कें, खोलै सबके आँख।
शिक्षक डाँटै जोर सें, होलौ तोरा पाँख।।53।।
धमकाबै अध्यापकें, पर पटेल निर्भीक।
सीधा बोलै काम सब, हमरों बिल्कुल ठीक।।54।।
घटिया कामों के खबर, अभिभावक के पास।
जेन्हें गेलै शिक्षको, होलै बड़ी हतास।।55।।
समझौता सें मामला, तब गेलै फड़ियाय।
शिक्षक घटिया काम सें, जब गेलै शरमाय।।56।।

वाजिब बातों में कभी, पीछू हटना पाप।
ई सब रहै पटेल पर, परिवारों के छाप।।57।।
शिक्षक इनकों छात्र सें पूछी लड़ै चुनाव।
चुट्टी काटै लोग सब बड़ा अजब छै ख्वाब।।58।।
निश्चित तोरों हारना, नापी लें औकात।
गेले पटेल कान तक, अहिनों टेढ़ों बात।।59।।
शिक्षक के अपमान ई, बरलै इनका खीश।
जमा करै सब छात्र कें, धरै चुनौती शीश।।60।।
लगलै जहाँ प्रचार में, होलै जय-जय कार।
होलै शिक्षक के विजय, डालै गल्ला हार।।61।।
बिहा अठारह वर्ष में, लें पटेल के जान।
पर पढ़ाय में जोर सें, देतें रहलै ध्यान।।62।।
बाइस केरों उम्र जब, करलक मैट्रिक पास।
यै डिग्री कें ऊ समय, मानें छेलै खास।।63।।
जिला वकालत पास कर, डिग्री लेलक हाथ।
करें वकालत लागलै, बड़ी धैर्य के साथ।।64।।
वकालतों में निपुणता, हासिल करलक ढेर।
नाम करलकै देश में, नैं लगलै कुछ देर।।65।।
नीरस आरू हारलों, केशों कें अपनाय।
बुद्धि बलों पर ओकरा, दै छेलै फड़ियाय।।66।।

आबकारी विभाग के, पुलिस रहै मदमस्त।
पकड़ी कें अभियुक्त कें, करै रहै भय-त्रस्त।।67।।
चोरी सदा शराब के, जे धन्धा अपनाय।
पकड़ी-पकड़ी ओकरा, कारागृह भेजाय।।68।।
दू बोतल के साथ में, पकड़ाबै अभियुक्त।
मजिस्ट्रेट अधिकार में, गेलै जे उपयुक्त।।69।।
मजिस्ट्रेट खाली करै, दोनों बोतल बन्द।
बैठी गढ़ै पटेल तब, बढ़िया-बढ़िया छन्द।।70।।
वकील के अधिकार सें, बोतल मांगै पास।
भेजै तखनी जाँच लें, जकरों नैं कुछ आस।।71।।
जाँच बताबै बोतलों में छै पानी शुद्ध।
जारी रहै वकील में, बात-बात के युद्ध।।72।।
अहिनों गाथा ढेर छै, पटेल जी के संग।
लड़ै मुवक्किल बासतें, कानूनी नित जंग।।73।।
बढ़ले गेलै ख्याति नित, बढ़ले गेलै मान।
सब वकील के बीच में, रहै बड़ी सम्मान।।74।।
जीवन यापन लें सदा, काम बड़ा अनिवार्य।
पर अनुचित जे काम छै, नैं इनका स्वीकार्य।।75।।
बैठी जन समुदाय में, करै विचार-विमर्श।
रहलै अनुकरणीय ही, जीवन के आदर्श।।76।।

सुन्दर बड़ी 'झबेरबा' उत्तम बड़ी विचार।
पत्नी बनी पटेल के, बदलै घर-संसार।।77।।
पत्नी विट्ठल के सदा, खर्चा करै अपार।
मालिक घर के रात-दिन, करतें रहै कचार।।78।।
आपस के मतभेद सें, लगै बिगड़लों हाल।
समझें लागै छै तुरत, की नैहर-ससुराल।।79।।
जब ईस्वी उन्नीस सौ तीन रहै ऊ साल।
एगो कन्या जन्म सें, चमकी गेलै भाल।।80।।
बड़ी प्यार सें झबेरबा, नाम रखलकी खास।
कहै सदा 'मणिबेन' जी! आओ मेरे पास।।81।।
डाह्याभाई नाम के, पुत्र हुवै कुछ बाद।
जीवन में संतान सुख, मेटै छै अवसाद।।82।।
किन्तु पत्नी झबेरबा, स्वास्थ्य गमाबै ढेर।
रहै रसौली पेट में, संकट लानै घेर।।83।।
'कामा' होस्पीटल सदा, बम्बय केरों शान।
वहीं ओपरेशन हुवै, साथ रहै संतान।।84।।
रहै वकील पटेल जी, वकालतों में व्यस्त।
केश-काश के जाल में, फसलों तइयो मस्त।।85।।
कामों केरों व्यस्तता, छेलै पटेल पास।
नैं महसूसै कोट में, घर के कोनो ह्रास।।86।।

देखै खातिर इक झलक, नैं मिललै अवकाश।
ढेर दिन तक झबेरबा, रहलै सबके पास।।87।।
बड़ी अचानक दुष्घड़ी, आबै छै तत्काल।
गेली तुरत झबेरबा, हँसी काल के गाल।।88।।
सोचै वाली छै कथा, गछ्छी लै जे काम।
रहै लागलों रात दिन, दै खातिर अंजाम।।89।।
तारों द्वारा ई खबर, गेलै पटेल पास।
जल्दीबाजी लें यहें, माध्यम छेलै खास।।90।।
बहस करै के बीच में, कागज एगो भाय।
चपरासी दै हाथ में, दौड़ी कें पहुँचाय।।91।।
उलटी-पुलटी पढ़लकै, थैली में दै डाल।
बहस करै में लागलै, छेलै बड़ी बबाल।।92।।
बारह जनवरी उन्नीस सौ, नौ के छेकै बात।
वल्लभ भाई पटेल पर रहे, सच अद्भुत आघात।।93।।
जज्जों के आदेश सें, होलै इनकों जीत।
दौड़ी आबी कें मिलै, इनकों एगो मीत।।94।।
पूछै कागज में रहौं, की लिखलों संदेश।
अबें बताबों शीघ्र तों, जीती लेल्हें केश।।95।।
कागज दै छै हाथ में, पढ़थैं सब बेहाल।
लिखलों पत्नी के निधन, होलै बड़ी मलाल।।96।।

आश्चर्य चकित करलकै, सबकें वहीं पटेल।
कौनें जानै छै यहाँ, की विधना के खेल।।97।।
रणधीर नाम के रहै, एगो थानेदार।
काम करै बढ़िया मगर, लटकै सिर तलवार।।98।।
एक वार जब ओकरा, माथा पर इल्जाम।
लकड़ी चोरी के लगै, चूबें लगलै घाम।।99।।
मलनें हाथ पटेल लग, ऐलै मोंन झमान।
आगू बैठी हृदय से करै खूब गुणगान।।100।।
कथा-कहानी सब सुनै, छेलै ऊ निर्दोष।
पहिनें जरा पटेल जी, होलै कुछ खामोश।।101।।
तीस बरस पहिनें सजा, काटै कोनों जेल।
पढ़बै उनका पाठ ई, देखों अद्भुत खेल।।102।।
कोर्टों में ई दोष कें जब करलक स्वीकार।
वकील सरकारी कहै, 'जा फेनूँ ऊ द्वार।।103।।
गलत काम में लिप्त तों, तोरों यहें चरित्र।
झाँपै लेली ओकरा, वकील बनल्हों मित्र।।104।।
पर पटेल चुपचाप छै, देखी लोग हतास।
इनकों तें सब काम पर, रहै पूर्ण विश्वास।।105।।
दै पटैल खुद हाथ सें, जज कें प्रमाण-पत्र।
सन्नाटा छै कोर्ट में, यत्र-तत्र-सर्वत्र।।106।।

प्रमाण-पत्र कहै वहाँ, मुजरिम छै निर्दोष।
तीस बरस पहिनें कहाँ, मुजरिम कें कुछ होश।।107।।
मुजरिम अखनी तीस के, जज कें दै समझाय।
करलक मुजरिम कें रिहा, सब गेलै चकराय।। 108।।
जज सें तब मुजरिम कहै, सजा सही नौ माह।
भोगा है सच जेल में, होकर बेपरवाह।।109।।
कारा माँ का गर्भ था, वहाँ जरा ना कष्ट।
प्राणी आकर भूमि पर, हो जाता है भ्रष्ट।। 110।।
लहर खुशी के बात सें, लहराबै ऊ वक्त।
चिन्तित रहै वकील सब, जे जज्जों के भक्त।। 111।।

❖❖

सर्ग तीन

वल्लभ भाई देखै-सोचै,
बैरिस्टरी जे पास।
वकालतों में आमदनी के,
जरिया एकदम खास।।1।।
आकांक्षा बैरिस्टर बनना,
शोर मचाबै अंदर।
लागै कखनी पार उतरियै,
जल्दी महा समंदर।।2।।
कहै बिलायत जाना होगा,
पन्द्रह हजार खर्चा।
कहाँ चलइयै कर्जा लेली,
मुँह खोली कें चर्चा।।3।।
मित्र जयन्ती ढेबर छेलै,
बात वहाँ पर खोलै।
लेकिन खर्चा के तंगी के,
बात वहाँ नैं बोलै।।4।।

'जहाँ चाह छै वहाँ राह भी',
लगन बनाबों पक्का।
ईमान अगर साथें छों तें,
मारी देभो छक्का।।5।।
टामस कुक एण्ड सन्स एगो,
रहै कंपनी भारी।
उनका बल पर फौरन होलै,
फौरन के तैयारी।।6।।
डूबै लें तैयार अगर नैं,
मुश्किल छों तैराकी।
मदिरालय सें दूर अगर तों,
कैसें मिलथों साकी।।7।।
यथार्थ में आदर्श तलासों,
बनभें सदा विवेकी।
अन्तर दोनों में जों करभें,
रस्ता देथों छेकी।।8।।
अंग्रेजी में संक्षेपों में,
नाम लिखै छै ढेरी।
ऊ नामें ढेरी नामों के,
लै छै साथें घेरी।।9।।

औन्हैं होलै वल्लभ भाई,
विट्ठल भाई साथें।
वी.जे. पटेल देखी ऐलै,
बात दोसरे माथें।।10।।

विट्ठल, वल्लभ दोन्हूँ साथें,
झबेर भाई ऐतै।
वी.जे. पटेल में नैं शंका,
दोनों ही कहलैते।।11।।

विट्ठल भाई मन-मन गाजै,
तनियो टा नैं अंतर।
अपनों भाग्य सराहें लगलै,
तखनी अंदर-अंदर।।12।।

बोलै केरों तौर-तरीका,
विट्ठल भाई जानै।
उनकों कहलों बात-हमेशा,
वल्लभ भाई मानै।।13।।

आबी पटेल आगू बोलै,
तुम हो छोटा भाई।
पहले मैं ही चलूँ बिलायत,
बात हृदय में आयी।।14।।

यह अवसर हमको ही देदो,
पीछे तुम भी जाना।
पारिवारिक बोझ संभालो,
ज्यादा क्या समझाना।।15।।

वी.जे. सें नैं नामों में कुछ,
अंतर तनियों आबै।
विट्ठल भाई सच अवसर सें,
पूरा लाभ उठाबै।।16।।

किंकर्त्तव्यबिमूढ़ बनी कें,
मानी लै छै कहना।
के देखै छै आंसू केरों
भीतर-भीतर बहना।।17।।

काम करलकै विट्ठल भाई,
केरों वहाँ सफाई।
सपना कें साकार करलकै,
पीछू वल्लभ भाई।।18।।

बैरिस्टर बनना आकांक्षा,
मन सें कभी न त्यागै।
मिलै सफलता थोड़े दिन में,
देर भले कुछ लागै।।19।।

बैरिस्टर बनला पर इनकों,
आगू-पीछू ढेरी।
इनका क़ामों में नैं लागै,
जज्जों लेगी देरी।।20।।
मुवक्किलों सें सीधा-सीधी,
बात करै जब रोजे।
कोर्ट-कचहरी में हरदम्में,
इनके लागै खोजे।।21।।
नेहरू पटेल एक साथें,
संग्रामों में लगलै।
दोन्हूँ के कोशिश करला सें,
जनता पूरे जगलै।।22।।
कतना बेरी जेलों केरों,
अन्दर-बाहर होलै।
जनता बीचें अंग्रेजों के,
भेद हमेशा खोलै।।23।।
वल्लभभाई पटेल हरपल,
चिन्तनशील रही कें।
जनता के दिल जीतै छेलै,
समुचित बात कही कें।।24।।

रहै बड़ा गंभीर हमेशा,
सोची समझी बोलै।
शालीनता करी आगू में,
सब रहस्य कें खोलै।।25।।
जीयै केरों तौर-तरीका,
उच्च स्तर अपनाबै।
पहिरावा अंग्रेजों अहिनों,
हरपल उनका भावै।।26।।
पर गाँधी बाबा में सटथैं,
सब्भे राह बदललै।
अनुयायी जब बनलै उनकों,
उनके राहें चललै।।27।।
बापू जी कें अंग्रेजों सें,
टक्कर लेना छेलै।
टक्कर केरों चक्कर में
शासक बौला भेलै।।28।।
ठीक उन्नीस सौ सतरह में,
पटेल गाँधी साथें।
ब्रिटिश राज विरोध के डोरी,
थाम्हैं अपना हाथें।।29।।

सत्य-अहिंसा आन्दोलन सें,
डिविजन खेड़ावासी।
उनका साथें मरै-मिटै के,
बनलै तब अभिलाषी।।30।।
खेड़ा सूखा के चपेट में,
चिन्तित कल्पै-कानै।
'कर' में भारी छूट माँग कें,
सरकारें नैं मानै।।31।।
गाँधी जी के साथ किसानों
के करलक अगुआयी।
आन्दोलन कारी किसान के,
होलै बड़ी भलाई।।32।।
कर में भारी छूट दिलाबै,
किसान हरखित जानों।
पटेल के खाता में ई ठो,
प्रथम सफलता मानों।।33।।
कुशलता सें करलका सब्भे,
काम योग कहलाबै।
अहिनों काम करै वाला भी,
योगी ही कहलाबै।।34।।

वल्लभभाई योगी छेलै,
असहयोग में फानै।
अंग्रेजें कामों कें देखी,
पग-पग लोहा मानै।।35।।
अहमदाबाद म्युनिसिपैलिटी
में ओछों अधिकारी।
जनता कें साफै झलकै ऊ,
भारी अत्याचारी।।36।।
वल्लभभाई तंग करलकै,
इस्तीफा दें भागै।
वल्लभभाई के कामों सें,
जनता ज्यादा जागै।।37।।
झंडा सत्याग्रह आन्दोलन,
कें जब सफल बनाबै।
सत्य-अहिंसा अपनाबै के,
सच्चा राह दिखाबै।।38।।
करै मुण्ड-कर लें आन्दोलन,
जनता राहत पाबै।
गुजरात बाढ़ संकट ठाम्हैं,
सबके आगू आबै।।39।।

बेघर-वार भटकलों जनता,
भूखें शोर मचाबै।
वल्लभभाई चतुराई सें,
संकट दूर भगाबै।।40।।
लोर्ड इर्विन वाइसरॉय कें,
सारी बात बताबै।
सरकारी अनुदानों बल पर,
सबके भवन बनाबै।।41।।
फनूँ बारडोली सत्याग्रह,
पटेल आगू ऐलै।
यै सत्याग्रह आन्दोलन में,
नेता ऊपर छैलै।।42।।
गुजरातों के प्रभावशाली,
नेता बनलै तखनी।
बारडोली के किसानों कें,
जमा करलकै जखनी।।43।।
महत्वपूर्ण भूमिका चलतें,
सब्भैं जानें लगलै।
लोग बारडोली कस्बा के,
पूरा मानें लगलै।।44।।

राष्ट्रीय काँग्रेस में उनका,
जग्घों मिललै अच्छा।
तहिया सें सरदार कही कें,
जानै बूढ़ें-बच्चा।।45।।
तब सरदार पटेल नाम सें,
सदा पुकारै जनता।
जनता कें मोहै के उनका,
अद्भुत छेलै क्षमता।।46।।
सदी बीसवीं दसक दोसरों,
बीतै वाला छेलै।
काँग्रेसी दरिया के बीचें,
पटेल जखनी हेलै।।47।।
तहिया सें सैंतीसों तक में,
खूबे आगू बढ़लै।
काँग्रेस केरों सभापति पद,
उनका हाथें पड़लै।।48।।
दू-दू बार पदों पर बैठी,
करलक पूरा सेवा।
धर्म ग्रंथ के पन्ना में छै,
सेवा के फल मेवा।।49।।

पटेल जी के कामों केरॉ,
बापू करै प्रशंसा।
पटेल कें भी प्यारों छेलै,
हरपल सत्य-अहिंसा।।50।।

प्रांतीय काँग्रेस गुजराती,
गठन करलकै जखनी।
अध्यक्षों के पद बैठैलों,
गेलै पटेल तखनी।।51।।

गुजरातों के भार पटेलें,
अपना हाथें लेलक।
राष्ट्रों के नेतृत्व करैलें,
बापू जी कें देलक।।52।।

अठारह ईसवी में पहिलों,
महायुद्ध फड़ियैलै।
जापानी के विजय पर्व सें,
भारतीय हरसैलै।।53।।

अंग्रेजों के पंजा सें नित,
आबै लेली बाहर।
अंग्रेजों कें देखै जेना,
पशु कें भूखा नाहर।।54।।

रॉलेट एक्ट करै छै लागू,
अंग्रेजी सरकारें।
भारत के जनता कें तोड़ै,
एक्टों केरों भारें।।55।।

ई एक्टों में जकरा ऊपर,
थोड़ो-सा शक होलै।
सब कें पकड़ी अंग्रेजें,
जेलों अन्दर ठेलै।।56।।

सत्याग्रह आन्दोलन लेली,
जनता कें समझाबै।
ई कामों में गाँधी साथें,
पटेल आगू आबै।।57।।

वही समय में हिन्दू-मुस्लिम,
दंगा होलै भारी।
दिल्ली केरों जनता कानै,
तखनी हक्कन पारी।।58।।

दिल्ली लेली बापू चललै,
जनता कें समझाबें।
गिरफ्तार होलै रस्ता में,
की-की करतै आबें।।59।।

अहमदाबाद में भी दंगा,
तखनी छिड़लों छेलै।।
निर्दोषे सब ऊ चक्कर में,
जेलो ढेरी गेलै।।60।।
जेलों सें तब रिहा कराबै,
पटेल अपना हाथें।
पर 'जनरल ओ डायर' धोखा,
करलक जनता साथें।।61।।
जलियाँ वाला बागों में तब,
हत्याकाण्ड कराबै।
भारत माता के सपूत सब,
ढेरी जान गमाबै।।62।।
अंग्रेजों के अत्याचारों
सें जनता घबड़ाबै।
असहयोग आन्दोलन लेली,
फेनूँ हाथ बढ़ाबै।।63।।
क्रान्तिवीर सावरकर जहिनों,
गेलै काला पानी।
मौका पाबै जब अंग्रेजें,
करै खूब मनमानी।।64।।

विदेशी वस्तु बहिष्कार के,
नारा लागें लगलै।
सदा मातृभाषा हिन्दी लें,
भाव मनोहर जगलै।।65।।
हिन्दू-मुस्लिम एक अगर नैं,
होभें भारतवासी।
अंग्रेजों के आगू झुकभें,
सब्भे भाषा-भाषी।।66।।
सत्याग्रह दायित्व हमेशा,
पटेल माथा छेलै।
पर चौरी-चौरा काण्डों सें,
चिन्तित पूरा भेलै।।67।।
आठ फरवरी बाइस ईस्वी,
बीतै छेलै जखनी।
चौरी-चौरा काण्डें सबके,
नाक कटाबै तखनी।।68।।
गोरखपुर के चौरी-चौरा,
पुलिसो स्टेशन भारी।
पुलिस जराबें आग लगाबै,
जब आन्दोलन कारी।।69।।

इक्कीस ठो सिपाही जरलै,
बापू जी घबड़ाबै।
सत्य-अहिंसा कैसें चलतै,
जरा समझ नैं आबै।।70।।

फनूँ पकड़ में ऐलै बापू,
सजा कठोर सुनाबै।
जानी कें छों साल सजा सब,
नेता लोर बहाबै।।71।।

अंधकार भारत में छैलै,
खूब मनोबल टूटै।
पर पटेल हिम्मत नैं हारै,
एक करै में जूटै।।72।।

पचीस जनवरी इकतीस कें,
कुछ काँग्रेसी छेलै।
बापू साथें-साथें उनकों,
रिहा तखनियें भेलै।।73।।

गाँधी-इरविन समझौता जब,
पाँच मार्च कें होलै।
सब्भे टा सत्याग्रहियों लें,
गेट जेल के खोलै।।74।।

सर्ग चार

सुभाष विरोधी अहिंसा के,
हरदम छेलै सोच निराला।
कलम व्यर्थ छै ऊ जग्घों पर,
जखनी जहाँ काम छै भाला।। 1।।

सुभाष चन्द्र बोस तें बेहद,
सब्भै कहै सदा जोशीला।
बापू जी के कामों में भी,
हरदम टाँग अड़ाबै वाला।। 2।।

सदा पटेलों कें भी मानै,
नेता खाली गुजरातों के।
बापू लादै देशों ऊपर,
यहें कष्ट हरदम बातों के।। 3।।

पटेल तथा सुभाषों बीचें,
लागै छेलै जरा मतांतर।
सुभाष चाहै सीधा-सीधी,
हमला करना अंग्रेजों पर।। 4।।

छोड़ी बात अहिंसा-हिंसा,
पाना छै हमरा आजादी।
हरदम काम कहाँ सें देतै,
काँगेसों के खाली खादी।। 5।।

मगर पटेलें, गाँधी चाहै,
हिंसा बिन पाना आजादी।
दोन्हूँ कें नैं अच्छा लागै,
देशों के कखनूँ बरबादी।। 6।।

पटेल भारत कें ब्रिटेन के,
चाहै छेलै संघ बनाना।
ताकी होतै संभव जल्दी,
भारत कें आजादी पाना।। 7।।

मगर सुभाषें एक्खै बेरी,
चाहै छेलै ढोल बजाना।
त्रेता वाला राम कथा कें,
नैं चाहै छेलै दुहराना।। 8।।

नैं मुँह सीबी हम्में रहबै,
नैं अनाचार कें सहना छै।
शानों सें बोलै सुभाष तब,
अध्यक्ष पदों पर रहना छै।। 9।।

'काँग्रेस अध्यक्ष पद खातिर
दाबेदार अकेला हूँ मैं।
पाकर कभी नही छोड़ूंगा,
समझो बड़ा झमेला हूँ मैं-'।। 10।।

तीव्र विरोध पटेल करलकै,
पर सुभाष नैं बातें आबै।
पट्टाभि सीतारामैया कें,
माला हारों के पहनाबै।। 11।।

पर पटेल, गाँधीजी हरदम,
अपने हार सदा ठहराबै।
देशों खातिर बड़ी समस्या,
घाव मतांतर के गहराबै।। 12।।

त्रिपुरा केरों अधिवेशन में,
सुभाष शामिल जब नैं होलै।
वहाँ एक शुभचिन्तक आबी,
नैं आबै के कारण बोलै।। 13।।

अधिवेशन में पटेल जी के,
जे प्रस्ताव रखैलों गेलै।
नीचें लिखौं सर्व सम्मति सें,
सभा बीच ऊ पारित भेलै।। 14।।

'आबै बाला समय कहै छै,
देशों पर संकट मँड़राबै।
समाजवादी सें संभव नैं,
ऊ संकट सें जे टकराबै।। 15।।

अहिनों संकट काल देश सें,
टालै वाला छै काँग्रेसी।
कार्यकारिणी विश्वास सदा,
गाँधी जी पर राखें बेशी।। 16।।

कार्यकारिणी निर्माणों में,
गाँधी जी के चलतै इच्छा।
नेता सब्भैं मिली-जुली कें,
करतें रहतै सदा समीक्षा।।'' 17।।

जब प्रस्ताव सुभाष सुनै छै,
अध्यक्षों के पद कें त्यागै।
मोतीलाल-जवाहर दोनों,
पिता-पुत्र भी दूरे भागै।। 18।।

दक्षिण पंथी सुभाष जी कें,
नैं मानै छेलै काँग्रेसी।
काँग्रेसों सें पकड़ बनैनें,
पटेल रहलै हरदम बेशी।। 19।।

गाँधी-इरविन समझौता के,
बाद घटै दू भारी घटना।
भारतवासी सोचें लगलै,
देशों खातिर मरना-मिटना।। 20।।

तैस मार्च दू ठो नेता कें,
भगत सिंह के साथें-साथें।
फाँसी पर लटकैलों गेलै,
निर्दय अंग्रेजों के हाथें।। 21।।

लाशों के जे दशा पुराबै,
अखनी ऊ की कहलों जैतै।
आतंकी ऊ अंग्रेजों कें,
कैसें केना के समझैतै।। 22।।

कानपुरों में फेनूँ दंगा,
हिन्दू कें मुस्लिम के साथें।
गणेश शंकर विद्यार्थी के,
हत्या होलै मुस्लिम हाथें।। 23।।

चौंतीसों में काँग्रेसों के,
पटना में अधिवेशन होलै।
समाजवादी काँग्रेसी कें,
नरेन्द्र जी आबै लें बोलै।। 24।।

काँग्रेसी सोशलिस्ट पार्टी,
केरों गठन करैलों गेलै।
जयप्रकाश नारायण जी कें,
मंत्री वहाँ बनैलों गेलै।। 25।।

गाँधीजी भी वै पार्टी के,
स्वागत केन्हौं करनें छेलै।
पर समाजवादी में कखनूँ,
पटेल नैं अपनों मन ठेलै।। 26।।

काँग्रेस अधिवेशन लखनऊ,
अध्यक्ष जवाहर लाल बनै।
आचार्य नरेन्द्रदेव, जे.पी.
सब्भै केरों तब जश्न मनै।। 27।।

अनुचित काम जहाँ पर ककरों,
विरोध में ही पटेल बोलै।
अन्यायी के भेद हमेशा,
जनता केरों बीचें खोलै।। 28।।

नरेन्द्र देव के नीति साथें,
भाव रहै गाँधी के सटलों।
तइयो अपना सिद्धान्तों पर,
पटेल रहलै हरदम डटलों।। 29।।

सुभाष बात भंग करलकै,
काँग्रेसों के अनुशासन कें।
नेता सब्भैं अनुचित मानै,
सुभाष बाबू के भाषण कें।। 30।।

आबै वाला तीन वर्ष तक,
करै चुनाव लड़ै से वंचित।
अलगे पार्टी में तब लगलै,
इनकों सारा ताकत संचित।। 31।।

काँग्रेसों के खिलाफ मोर्चा,
फॉरवर्ड ब्लॉक बनाबै छै।
काँग्रेसों के विरोध करना,
पार्टीगण कें समझाबै छै।। 32।।

यै कामों सें सुभाष बाबू,
जनता के नजरों सें गिरलै।
आपस में ही मतभेदों के,
डंका पीटै लें तब भिड़लै।। 33।।

❖❖❖

सर्ग पाँच

द्वितीय विश्व-युद्ध में जखनी, भारत कें भी झौके।
पटेल बेहद क्रोधित होलै, मनमानी कें रोकै।। 1।।
मुस्लिम लीग अलग मनसूबा, सदा बनैनें छेलै।
देश विभाजन करबाबै के, अलगे खेला खेलै।। 2।।
युद्ध विरोधी नाराबाजी, जगह-जगह पर होलै।
जकरा असहयोग आन्दोलन, भारतवासी बोलै।। 3।।
सतरह अक्टूबर इकतालिस, पवनारों में शासन।
करै बिनोवा भावे जखनी, युद्ध विरोधी भाषण।। 4।।
अगला वक्ता पटेल ऐलै, भाषण दैलें आगू।
एक सौ उनतीस धारा तब करै तुरन्ते लागू।। 5।।
काफी तेज बुखार रहै पर, गिरफ्तार तें होलै।
जेल यरवदा रहै पुरानों, वहीं भेजलों गेलै।। 6।।

सन बयालिसों में क्रिप्स मिशन, भारत जखनी ऐलै।
पूर्ण स्वाधीनता के बदला, लिखी दोसरे गेलै।। 7।।
अंग्रेजो भारत छोड़ो, गाँधीजी के नारा।
ई नारा तें तेज करलकै, आन्दोलन के धारा।। 8।।
मुस्लिम लीग के नेतृत्व में, जिन्ना हरदम बोलै।
काँग्रेसों के कमजोरी कें, जालिम आगू खोलै।। 9।।
हिन्द-पाक कें अलग राज्य लें, जिन्ना के मनसूबा।
काँग्रेसों के लागै तखनी, निर्णय बड़ी अजूबा।। 10।।
अंतरिम सरकार बनैलकै, मोंन नेहरू मारी।
मुस्लिम लीग सरकार में ऐलै, जे बिल्कुल लाचारी।। 11।।
शैतानी के खून रगों में, जिन्ना कें जब दौड़ै।
बापू के अनुयायी सब कें, पेट हमेशा औड़ै।। 12।।
अंतिम मार्च कराँची में जब, अधिवेशन के बारी।
अध्यक्ष पदों पर पटेल कें, देखै आँख पसारी।। 13।।
ख्याति देश के अन्दर इनकों, जनता सब्भैं गाबै।
पर अंग्रेजें कठोरता के, रुख पूरा अपनाबै।। 14।।
पटेल आरू गाँधीजी कें, अंग्रेजें जब पकड़ै।
यरवदा जेल केरों अन्दर, दोन्हूँ कें तब जकड़ै।। 15।।
डेढ़ महीना बादें नासिक, जेल भेजलों गेलै।
एक साल तक वहीं जेल में, संकट पूरा झेलै।। 16।।

वही बीच में निधन भाय के, विट्ठल स्वर्ग सिधारै।
अंतिम संस्कारों में शामिल, खातिर मन कें मारै।। 17।।
हिन्दू-मुस्लिम केरों दंगा, अंग्रेजें भड़काबै।
फूट डालना, राज चलाना, नीति सदा अपनाबै।। 18।।
काँग्रेसी पार्लियामेंटरी, बोर्ड गठन जब होलै।
अध्यक्ष पदों पर पटेल कें, देख जहर कुछ घोलै।। 19।।
'अंग्रेजो अब भारत छोड़ो' गाँधीजी के नारा।
अंग्रेजों कें विह्वल करलक, नैं झलकै कुछ चारा।। 20।।
गाँधीजी के नारा केरों, धज्जी उड़बें लगलै।
गाँधीजी के झूठा नारा, सब कें बतबें लगलै।।' 21।।
काँग्रेसों में मातम छैलै, पर जिन्ना मुस्काबै।
आजादी के बीचें काँटों, जिन्ना तब अटकाबै।। 22।।
जिन्ना केरों गलत नीति लें, जे फटकारों-डाँटों।
ऊ तें सब कें लागें लगलै, रास्ता केरों काँटों।। 23।।
हिन्दू-मुस्लिम एक बनाबें, लाख खाक सब छानै।
लेकिन कट्टर पंथी जिन्ना, जरा एक नैं मानै।। 24।।
पाकिस्तान बनाबै लेली, जिन्ना करै प्रतिज्ञा।
तों दहो ओकरा बदला में, चाहें कोनों संज्ञा।। 25।।
भारत कें ब्रिटेन आजादी खातिर देलक नौता।
मगर अल्प संख्यक सें पहिनें, करना छें समझौता।। 26।।

पर साम्प्रदायिकता आगू, छेलै बड़ा झमेला।
लाख मनैल्हौ पर नैं मानै, जिन्ना खेलै खेला।। 27।।
मुस्लिम लीग, काँग्रेस बीचें चलै चुनावी चर्चा।
बाँटें लगलै सब अपना में, बड़का-बड़का पर्चा।। 28।।
मुसलमान जिन्ना कें समझै, नेता बड़का भारी।
पाकिस्तान अलग करना छै, सब बातों कें टारी।। 29।।
वायसराय करै समझौता, नेता बनै जवाहर।
गृहमंत्री केरों पटेल कें, मिलै तखनी पावर।। 30।।
लेकिन जिन्ना करै घिनौना, हरकत पूरा भारी।
मुसलमान हिन्दू कें जबरन, करै बनाना जारी।। 31।।
नौवाखाली आरू त्रिपुरा, में करलक मनमानी।
छेड़-छाड़ महिला के साथें, महिला बोलै कानी।। 32।।
अंतरिम सरकार विभाजित, दू भागों में होलै।
लार्ड माउण्टबेटन आबी, पूरा जहरे घोलै।। 33।।
मुस्लिम लीग विभाजन चाहै, यहें उचित ठहराबै।
दू जून सैंतालीस ईस्वी, कें परचा लहराबै।। 34।।
दोनों दल स्वीकार करलकै, देशों के बँटवारा।
लागें लगलै दोन्हूँ केरों, अलग-अलग सब नारा।। 35।।
पाकिस्तान लाश पर बँटतै, गाँधी मन में ठानै।
हरिश्चन्द्र रं सत्य निष्ठ नैं, बनलै सब्भैं जानै।। 36।।

स्वीकारै काँग्रेस विभाजन, जनता कुछ गरियाबै।
पटेल, गाँधी, लाल जवाहर, सब्भै कें समझाबै।। 37।।
अगर विभाजन कें नैं मानौं, काफी दशा बिगड़तै।
दस टुकड़ा भी भारत होतै, नौबत अहिनों ऐतै।। 38।।
देशों के हालत बेकाबू, मुश्किल रहै सुधरना।
लाचारी सब्भै के होलै, देश विभाजन करना।। 39।।
बँटवारा के दोष जवाहर, पटेल माथाँ पड़लै।
बापू तें भीतर ही भीतर, घुटलै पर नैं मरलै।। 40।।
बापू जी के सबसें प्यारों, छेलै लाल जवाहर।
तकरे हाथें देना छेलै, देशों केरों पावर।। 41।।
साम्यवाद के तरफ नेहरू केरों मन कुछ भागै।
साम्यवाद के कट्टर दुश्मन, वल्लभभाई लागै।। 42।।
दोन्हूँ में मतभेद हमेशा, जनता जानें लगलै।
गाँधीजी के अन्दर भी तें, पक्षपात कुछ जगलै।। 43।।
एक बात जे इतिहासों में, पढ़थें जनता सोचै।
स्पर्द्धा वाली बात नेहरू, केरों सबकें नोचै।। 44।।
उन्नतीसों के अधिवेशन जे, लाहौरों में भेलै।
वै में गाँधी केरों बादें, पटेल के पद छेलै।। 45।।
अध्यक्षों के पद पर तखनी, पटेल रहै एकलौता।
लेकिन गाँधीजी के मन सें, नैं होलै समझौता।। 46।।

दाबेदार प्रबल नैं दोसर, रहै विवेकी मर्मी।
मुसलमान के प्रति गाँधी कें, लगै मगर हठधर्मी।। 47।।
यै शंका के चलतें गाँधी, इनका पीछू छोड़ी।
अध्यक्ष पद लें नेहरू के, नामे दै छै जोड़ी।। 48।।
पैतालीस-छियालीसों में, वहिनें खेला खेलै।
फनूँ नेहरू अध्यक्षों के, पद पर बैठी गेलै।। 49।।
उम्मीदवार रहै पटेले, मगर नेहरू लेली।
गाँधी बाबा पटेल जी कें, देलक पीछू ठेली।। 50।।
नेहरू प्रेम जे गाँधीजी के, पूरा मारै धक्का।
बड़का-बड़का नेता सब्भे, होलै हक्का-बक्का।। 51।।
पटेल केरों हितघातों के, उदाहरण सब मानै।
सदा नेहरू पक्षपात कें, भीतर-भीतर जानै।। 52।।
प्रधानमंत्री अध्यक्षे पद, सब्भैं जानै छेलै।
ऊ पद तें बापू के चलतें, हाथ नेहरू गेलै।। 53।।
प्रधानमंत्री पद के लेली, करें नेहरू दावा।
समुचित मानै यहें बात कें, हरदम गाँधी बाबा।। 54।।
हुवै नेहरू-पटेल बीचें, भोटा-भोटी जखनी।
अधिक नेहरू सें पटेल कें, जनमत छेलै तखनी।। 55।।
पर गाँधी बाबा के आगू, ककरो केना चलतै।
उनकों विरोध करना सचमुच, दुनिया भर कें खलतै।। 56।।

साथें मैत्री बड़ी पुरानी, छेलै दोन्हूँ केरों।
दोनों एक्खै चट्टी पर के, दोनों एक्के जेरों।।57।।
बीर जवाहर या पटेल में, रहै भिन्नता ज्यादा।
ठाट नेहरू के अलबत्ता, पर पटेल के सादा।। 58।।
मातृभूमि के परम उपासक, यहाँ जरा नैं शंका।
आजादी लें ढोल बजाबै, पीटै दोन्हूँ डंका।।59।।
मगर कार्य शैली दोन्हूँ के, अलग-अलग कुछ छेलै।
दोन्हूँ केरों कान भरै में, लोगो खेला खेलै।।60।।
दोन्हूँ के मतभेद पाटना, बापू लेलक हाथें।
समझौता के बात चलाबै, दोन्हूँ केरों साथें।।61।।
पहनावा-ओढ़ावा केरों, अंतर कें नैं मानों।
मतभेदों के कारण तनियो टा नैं ऐजाँ जानों।।62।।।
भारत के आजादी के दिन, जखनी करीब छेलै।
'रूप मंत्रिमंडल के कहिनों', चर्चा ऐ पर होलै।।63।।
रहै मंत्रिमंडल भवनों लें, जुटलों ईटों, मिट्टी।।
पहिलों अगस्त सैतालिस कें, लिखै नेहरू चिट्ठी।।64।।
''निभाना औपचारिकताएँ, मन में मैंने ठाना।
और मंत्रिमंडल में शामिल, करूँ जरूरी जाना।।65।।
लिखता हूँ मैं चिट्ठी लेकिन, कुछ भी अर्थ नहीं है।
सुदृढ़ स्तंभ तो आप स्वयं हैं, कहना व्यर्थ नहीं है''।।66।।

जबाबों में पटेल लिखलकै, ''धन्यवाद है भाई।
हमदोनों का प्रेम अनूठा, जरा नहीं है खाई।।67।।
जहाँ मित्रता तीस वर्ष की, बैठी सिर के ऊपर।
वहाँ औपचारिकता को क्या, जगह मिलेगी भू पर।।68।।
मेरी सेवाएँ जो बाँकी, हाथ आप के होगी।
हमदोनों का ध्येय एक है, एक राह के योगी।।69।।
सम्पूर्ण वफादारी मेरी और शेष जो निष्ठा।
सदा आपकी रहे बढ़ाती, समुचित मान-प्रतिष्ठा।।70।।
त्याग और बलिदान आप सा, नहीं किसी से संभव।
सदा आप के बल-बूते पर संभव हुआ असंभव।।71।।
चिट्ठी में जो भाव मनोहर, व्यक्त हुआ है भाई।
उसकी खातिर कृतज्ञ हूँ मैं, झूठी नहीं बड़ाई।।72।।
प्रधानमंत्री पदें नेहरू कें गाँधी बैठाबै।
उपप्रधानमंत्री केरों पद, पटेल तखनी पाबै।।73।।
प्रधानमंत्री पद पर केन्हौं, अगर पटेल रहतियै।
भारत केरों नक्शा अखनी, अद्भुत कथा कहतियै।।74।।

❖❖❖❖❖

सर्ग छह

आजादी के पहिनें जखनी,
काल संक्रमण बोलै लोग।
देसी राजा केरों देहें,
लगलों छेलै भारी रोग।। 1।।
पी.बी. मेनन साथें घूमी,
देसी राजा कें समझाय।
भारत में मिलना छै अच्छा,
देलक सीधा बात बताय।। 2।।
स्वायत्तता जरा नैं संभव,
छै अखनी भारत लाचार।
भारत में मिलला सें होतै,
सब्भै के पूरा उपकार।। 3।।
सही नतीजा पटेल पाबै,
मानी कें इनकों आभार।
सब रजवाड़ा इच्छा सें ही,
करलक मिलना झट स्वीकार।। 4।।

सैंतालिस के आजादी तक,
चललै पटेल केरों तीर।
हैदराबाद, जूनागढ़ के,
साथ-साथ भागै कश्मीर।। 5।।
ई तीन्हों कें छोड़ी सब्भैं,
मानी गेलै पूरा बात।
लाख मनाबै, खाक न मानै,
ऊ तीनों लागै कुख्यात।। 6।।
भारत संघ कहाबें लगलै,
लेकिन बात न मानै तीन।
विकट समस्या जकरा चलतें,
रहै पटेल सदा गमगीन।। 7।।
जोर लगाबै जूनागढ़ पर,
नवाब भागै पाकिस्तान।
जूनागढ़ संघों में मिललै,
भारत केरों बढ़लै शान।। 8।।
बात हैदराबाद निजामें,
जब नैं मानै लें तैयार।
सेना भेजी आत्म-समर्पण,
लेली देलक पूरा भार।। 9।।

कुछ लाचारी केरों कारण,
पटेल करै रहै विश्राम।
औपचारिकता वश मिलै लें,
पहुँची गेलै वहीं निजाम।। 10।।
मेनन सें बोलै पटेल तब,
'फाइल लाओ मेरे पास'।
फाइल के पन्ना कें उलटै,
बोली में लानै भय-त्रास।। 11।।
फाइल आगू करतें बोलै,
'दसखत कर दो यहाँ निजाम'।
देखै आव न ताव निजामें,
दसखत मारै काम तमाम।। 12।।
बोली में ताकत कुछ अहिनें,
विवश करै दसखत लें भाय।
वही दिनाँ सें लौहपुरुष के,
पदवी गेलै पटेल पाय।। 13।।
पटेल आगू आत्म-समर्पण,
करै हैदराबाद निजाम।
आजादी के बादो पड़लै,
पटेल जी पर अहिनें काम।। 14।।

ऐजों थोड़ों अन्तराल के,
बात करै छी निस्संकोच।
लौह पुरुष पदवी पावै के,
कुच्छू अलग-अलग छै सोच।।15।।
लौह पुरुष कहलावै वाला,
कारण आरू कुछ लें जान।
जों नैं अठौं दिमागों में तें,
किंवदन्ती ही लें तों मान।।16।।
एकबार उनका देहों में,
होलै फोड़ा बड़ी विशाल।
लोहा सें दागै लें थोड़ा,
बोलै सब्भे लगै बबाल।।17।।
सही वहें उपचार तखनकों,
चीर-फाड़ सें सब अनजान।
धिपलों लोहा सें बस दागों,
छेलै सरल तरीका मान।।18।।
इनकों फोड़ा दागै वाला,
हिम्मत गेलै हारी भाय।
अपन्हैं हाथें अपनों फोड़ा,
दागै केरों करै उपाय।।19।।

दरदों सें नैं 'ईस' करलकै,
अहिनों हिम्मत करै जुटान।
बदली गेलै युग की होतै,
हमरा-तोरा ई अनुमान।।20।।
बनलै गृहमंत्री जखनी तें,
मंत्रीगण भी करै विचार।
भारतीय रियासत के विलय,
सब्भै सें नैं लगतै पार।। 21।।
करी दायित्वों के निर्वहन,
छोटों-छोटों छों सौ राज।
भारत संघों में जोड़ी कें,
बदलै रियासतों के साज।। 22।।
सब जानै छै बिना शर्त के,
राज्य मिलतियै जों कश्मीर।
भारत संघों के सागर में,
सदा रहतियै क्षीरे-क्षीर।। 23।।
मगर नेहरू अपना हाथें,
राखै कश्मीरों के भार।
विशेष राज्यों केरों दर्जा,
दें कें करनें छै सत्कार।। 24।।

इक अंतरराष्ट्रीय समस्या,
रहै नेहरू लेनें मान।
जकरा खातिर रही-रही कें,
अभियो उठथैं छै तूफान।। 25।।
हिनी ऑपरेशन करबाबै,
बेहोशी के नैं दरकार।
ई रड़् लौह पुरुष के आगू,
के करतै झूट्ठे तकरार।।26।।
अगर समस्या कश्मीरों के,
कहीं रहतियै पटेल पास।
गौरव के ई विषय रहतियै,
निर्णय में नैं मुश्किल खास।। 27।।
भाव नेहरु केरों उत्तम,
ई छेलै सब कें अनुमान।
पर रक्षा में हत्या होतै,
होलै उनका नैं कुछ भान।।28।।

❖❖❖❖❖❖

सर्ग सात

सोमनाथ मंदिर के गाथा,
अभियो दुनिया जानै।
प्रथम शताब्दी ईस्वी सन् में,
बनलै जखनी मानै।। 1।।

मूल्यवान हीरा-मोती सें,
मंदिर जड़लों छेलै।
धन-सम्पदा अपार वहाँ पर,
भरलों पड़लों छेलै।। 2।।

सदी ग्यारह चौबीस ईस्वी,
मंदिर पूरा टूटै।
खुराफात महमूद गजनवी,
जखनी आबी लूटै।। 3।।

निर्माण मंत्री श्री गाडगिल,
लें कें पटेल साथें।
निर्माणों के काम कराबै,
ढेरी अपनों हाथें।। 4।।

उन्नीस सौ सैंतालिसों कें,
तेरह रहै नवंबर।
आजादी के जश्न मनाबै,
पूरा धरती-अंबर।। 5।।

सौराष्ट्र के दौर पर जखनी,
पटेल मंदिर गेलै।
मंदिर के दुर्दशा बिलोकी,
पूरा चिन्तित भेलै।। 6।।

पुनर्निर्माण केरों निर्णय,
पटेल लेलक जखनी।
निर्माण समिति के निर्माणों,
तुरत कराबै तखनी।। 7।।

कन्हैयालाल माणिक मुंशी,
रही गाडगिल साथें।
जीर्णोद्धार करै मंदिर के,
पटेल केरों बातें।। 8।।

देश विभाजन साथें जगलै,
हिन्दू-मुस्लिम दंगा
मुसलमान तें पागल होलों,
नाचें लगलै नंगा।। 9।।

गाँधी चाहै एक करै लें,
हिन्द-पाक कें अभियो।
मुसलमान आतंक मचाबै,
मारै-काटै तभियो।। 10।।

पाकिस्तान चलै जब मुस्लिम,
पूरा रहै सुरक्षा।
पटेल, गाँधी देतें रहलैं,
शांति पाठ के दीक्षा।। 11।।

अतना होला पर भी मुस्लिम,
पूरा शोर मचाबै।
कुछ बातों में राई कें भी,
पर्वत तुरत बनाबै।। 12।।

गृहमंत्री रहला के कारण,
पटेल के बदनामी।
करतें रहलै जिन्ना अहिनों,
नेता नामी-ग्रामी।। 13।।

मान-प्रतिष्ठा भंग करै के,
खोजै हरदम मौका।
मुस्लिम लीग हमेशा चाहै,
डूबें जल में नौका।। 14।।

मुस्लिम पर जुल्मों के चर्चा,
पहुँचै बापू आगू।
ऊ चर्चा के दोष हमेशा,
पटेल ऊपर लागू।। 15।।

सरदारें जानै बातों कें,
पर छेलै लाचारी।
जनता लेली जान लगाबै,
शिकायतों कें टारी।। 16।।

देश विभाजन समय पाक कें,
पचपन करोड़ देना।
मानी लेनें छेलै गाँधी,
पटेल जेना-तेना।। 17।।

पाकिस्तानी गलत रवैया,
देखी पटेल ठानै।
नैं देना छै राशि मगर ई,
गाँधी जी नैं मानें।। 18।।

अनशन जारी रखना चाहै,
अगर बात नैं मानों।
जान गमैथों गाँधी बाबा,
अगर जिद्द तों ठानों।। 19।।

झुकलै पटेल बापू बातें,
अपनों हठ कें छोड़ै।
तभिये गाँधी बाबा अनशन,
खुशी-खुशी सें तोड़ै।। 20।।

मंत्री मंडल केरों नेता,
कुच्छू चिन्तित होलै।
बढ़िया कामों के दूधों में,
जहर जरा सा घोलै।। 21।।

पटेल के बढ़लों प्रभाव ही,
चिन्ता केरों कारण।
पटेल पद छोड़ी कें चाहै,
शिकायत के निवारण।। 22।।

त्याग पत्र लेनें हाथों में,
गाँधी आगू होलै।
मंत्रिमंडलों के पटेल तब,
बात जरा सा खोलै।। 23।।

मंत्रिमंडलों में आवश्यक,
दोन्हूँ केरों मानै।
बिना नेहरू पटेल केरों,
काम अधूरा जानै।। 24।।

बीस जनवरी अड़तालिस कें,
पटेल चिन्तित मन में।
मंत्रिमंडलों कें खुश करना,
चाहै छै क्षण-क्षण में।। 25।।

त्याग पत्र के बात जरा नैं,
बापू जी स्वीकारै।
शाम प्रार्थना सभा बाद में,
निर्णय के क्षण टारै।। 26।।

ककरा रहै पता बापू के,
क्षण नैं कहियो ऐतै।
दुनिया के कोना-कोना में,
पूरा मातम छेतै।। 27।।

जब प्रार्थना सभा में बापू,
सही समय पर आबै।
नाथूराम गोडसे आबी,
अपनों शीश झुकाबै।। 28।।

जेबों सें पिस्तौल निकालै,
फेनूँ दागै गोली।
गाँधीजी 'हे राम' कही कें,
बन्द करलकै बोली।। 29।।

शांतिदूत के जीवन लीला,
मेटी गेलै क्षण में।
जड़-चेतन विह्वल देखी कें,
शोक व्याप्त कण-कण में।। 30।।

दुख के गाथा जितना भी,
कहौं अधूरा होतै।
एक-आध ही हृदयहीन,
जकरों दिल नैं रोतै।। 31।।

गाँधीजी के निधन करलकै,
पटेल कें कुछ बौना।
मृग हत्या के बादें रहतै,
केना कें मृगछौना।। 32।।

पन्द्रह-बीस दिनाँ के बादें,
हृदय रोग जब घेरै।
देशों के हालत देखी कें,
रोगों कें नैं टेरै।। 33।।

स्वास्थ्य लाभ लें कहै चिकित्सक,
स्वास्थ्य निरंतर गिरलै।
देहरादून सें बम्बय तक,
ईलाजों में फिरलै।। 34।।

बारह दिसम्बर बम्बय चलै,
पटेल के मन डोलै।
'समय विदा का आया है अब',
साथी सें भी बोलै।। 35।।

मृत्यु के आभास भी उनका,
लागै छेलै मन में।
राजेन्द्र प्रसाद, जवाहर भी,
मौजूदा ऊ क्षण में।। 36।।

स्वास्थ्य जरा सा पहिनें अच्छा,
बम्बय में भी होलै।
फनूँ गिरावट आबें लगलै,
डॉक्टर आबी बोलै।। 37।।

पन्द्रह केरों रात भयंकर,
दौरा दिल के पड़लै।
सेवा में जे छेलै उनके,
गोदी मूर्छित गिरलै।। 38।।

प्रातः होला केरों पहिन्हैं,
स्वर्ग सिधारी गेलै।
देशों केरों कोना-कोना,
के नैं चिन्तित छेलै।। 39।।

खबर मृत्यु के पूरा देशें,
आगिन नाँकी फैलै।
प्रत्येक जाति, सम्प्रदाय में,
पूरा मातम छैलै।। 40।।

दुख के अथाह सागर बीचें,
डूबै वीर जवाहर।
देशों के जनता चिन्ता में,
झलकै भीतर-बाहर।। 41।।

शव यात्रा में देशे लागै,
गेलै बम्बय आबी।
गोविन्द वल्लभ पंत उनकों,
धन्य चरण रज पाबी।। 42।।

डाहयाभाई मुखाग्नि डालै,
रघुपति राघव गाबै।
'होनी कौन भला रोकेगा',
सब्भैं ई समझाबै।। 43।।

आज पटेल कहाँ धरती पर,
जहाँ कहीं भी रहतै।
भारत कें एकता सूत्र में,
बाँधै वाला कहतै।। 44।।

'भारतरत्न' उपाधि जहाँ तक,
चिन्ता केरों कारण।
देरी सें भारत सरकारें,
करलक फनूँ निवारण।। 45।।

'भारतरत्न' कहाबै वाला,
हे पटेल गुण गाबौं।
नत्मस्तक चरणों पर होलौं,
श्रद्धा सुमन चढ़ाबौं।। 46।।

❖❖❖❖❖❖❖

सर्ग आठ

सूर्यदेव में प्रखरता,
तपिश सदैव प्रकाश।
तीनों गुण संसार के,
जीवन केरों आश।। 1।।

तीनों गुण 'सरदार' में,
रहै सदा मौजूद।
सूरज रं संसार में,
गेलै छोड़ वजूद।। 2।।

कोनों लाग लपेट बिन,
सच्चा करै बयान।
देशों के उद्धार लें,
खोजै सदा निदान।। 3।।

विरोध नरेन्द्रदेव के,
करना भी स्वीकार।
नेता सुभाषचन्द्र कें,
दै छेलै दुत्कार।। 4।।

गरम पंथी प्रयोग में,
नैं जैतै काँग्रेस।
सत्य-अहिंसा सें सदा,
मेटें चाहै क्लैश।। 5।।

ज्यादातर सरदार पर,
करतें रहै प्रहार।
बाम पंथी के लोग सब,
तोड़ै जुटलों तार।। 6।।

सोशलिष्ट के संग में,
कम्युनिष्ठ के मेल।
इक खेमा में खेलतें,
रहै हमेशा खेल।। 7।।

पोषक पूंजीवाद के,
लौह पुरुष पर चोट।
आलोचक के नीति में,
लगै हमेशा खोट।। 8।।

इनका तें धनवान सें,

मतलब छेलै खास।

सामूहिक कामों घरी,

पहुँचै उनका पास।।9।।

उनका सें मिलतें रहै,

मनमाना सहयोग।

पर नैं अपना काम में,

पैसा के उपयोग।।10।।

बामपंथ के काम के,

करतें रहै खिलाफ।

वैचारिक कारण यहाँ,

झलकै छेलै साफ।।11।।

सरदारों के नजर में,

सब्भैके सम्मान।

इनकों अद्‌भुत सोच जे,

करतें रहै बयान।।12।।

''ऐतै हमरा समझ मेॅ,

होतै जब विश्वास।

पुंजीपति के नाश सें,

करतै हिन्द विकास।।13।।

सबसें आगू ही कदम,

रखतै तब सरदार।

हमरा करना छै सदा,

भारत के उद्धार।।14।।

आजादी पैलों सही,

संकट मेॅ छै लोग।

पहिलोॅ हमरोॅ फर्ज छै,

खोलै के उद्योग।।15।।

धन-संपत होतै जमा,

संकट होतै दूर।

मजदूरी मेॅ बृद्धि सें,

खुश होतै मजदूर।। 16।।

सोशलिज्म हमरा यहाँ,

सिखलैतै की खाक।

पहिनें जनता बीच मेॅ,

जमेॅ दहो कुछ शाक।।17।।

पब्लिक लाइफ मेॅ सदा,

करनें छी जब काम।

अपनों धन करलौं तुरत,

हम्हीं देश के नाम।18।।

हम्में जखनी पकड़लौं,
गाँधी जी के साथ।
अपनों सारा मिलकियत,
सें भी धोलौं हाथ।।19।।
खाता भी नैं बैंक में,
नैं जमीन नैं जाल।
अपनों घर कोनों कहाँ,
फिर भी छी खुशहाल।।20।।
पटेल जी के कथन कें,
करलों जाय मिलान।
जोड़ी लें मणिबेन कें,
जे इनके संतान।।21।।
पुत्री भी इनकों करै,
कायम एक मिशाल।
पिता विधुर होलै जहाँ,
उनका बड़ा मलाल।।22।।
भीष्म पितामह बाप हित,
करलक कहाँ विवाह।
मणिबेनें वोही तरह,
बदली लेलक चाह।।23।।

सेवा करना बाप के,
समझी धर्म महान।
आजीवन कौमार्य के,
मनसूबा लै ठान।।24।।
वल्लभभाई देश के,
सेवा में मशगूल।
सुख-दु:ख में मणिबेन जी,
राह बिछावै फूल।।25।।
चिंता कहाँ भविष्य के,
कर सेवा सत्कार।
जीवन जीयै यै कदर,
नैं कुछ के दरकार।। 26।।
रहलै जे अविवाहिता,
पटेल के भी बाद।
गुजर अहमदाबाद में,
करों जरा सा याद।। 27।।
बेडरूम सिंगल रहै,
मगर जरा नैं रूष्ट।
संज्ञा छेलै फ्लैट के,
वै में ऊ संतुष्ट।।28।।

छेलै कहिनों छाप जे,
जरा कहीं नैं स्वार्थ।
बलिदानी के राह के,
रहै फूल 'भावार्थ'।।29।।
धन्य-धन्य मणिबेन जी,
वल्लभ के संतान।
जकरों पूरा देश में,
भरलों छै सम्मान।।30।।
कहलाबै जगवंदिनी,
भय नैं छूवै देह।
वाणी में तुलना करों,
जैसें राज विदेह।।31।।
नेता बनै किसान के,
अंग्रेजों लें काल।
धीरज सें कायम करै,
भारत संघ विशाल।।32।।
भारत कें बाँधी रखै,
जेकि एकता सूत्र।
देशभक्त 'सरदार' जी,
देशों के ही पुत्र।।33।।

अखण्ड भारत के करै,
सपना कें साकार।
कहलाबै बस काम सें,
लौहपुरुष सरदार।।34।।
महाराजाधिराज कें,
समझाबै बेजोड़।
अनुराग पूर्ण बात सें,
चाहै लाना मोड़ा।।35।।
'जब भौगोलिक, सांस्कृतिक,
सामाजिकता एक।
राजनीति में आज हम,
खोयें नहीं विवेक।।36।।
सभी दृष्टि से एक हो,
अपना करें विकास।
भारत की संतान हम,
भर देंगे उल्लास।।37।।
लाख मनैल्हौ पर अगर,
नैं कुछ बदलै भाव।
लौहपुरुष तब बात में,
लानी लै बदलाव।।38।।

मोड़ै वक्त प्रवाह कें,
नैं छेलै मगरूर।
टक्कर लें प्रतिकूलता,
हरदम चकनाचूर।। 39।।
कथनी-करनी में रहै,
एक बनैनें सोच।
गलत विरोधी हर जगह,
नैं थोड़ो संकोच।। 40।।
भावै उनका अकड़ नैं,
नैं भावै हठयोग।
मेटै तीक्खों बात सें,
कठिन लगै जे रोग ।।41।।
जब नभवाणी केन्द्र के,
उद्घाटन संयोग।
पटना में होलों रहै,
जुटै बहुते लोग।।42।।
उद्घाटनकर्ता रहै,
लौह पुरुष सरदार।
आमंत्रण स्वीकार कर,
ऐलों रहै बिहार।।43।।

जमींदारी मुआवजा,
केरों छिड़लै बात।
तब बिहार सरकार पर,
बातों के बरसात।।44।।
श्री कृष्ण सिंह जी वहाँ,
निन्दा सें घबड़ाय।
अपनों पद सें त्याग के,
बाते दै छिरियाय।।45।।
सत्यनारायण बाबू,
पहुँचै पटेल पास।
संसदीय कार्य मंत्री,
मतलब राखै खास।।46।।
उत्तर में बोलै तुरत,
'लोकतंत्र सर्वोच्च।'
इसमें रखना चाहिए,
सबको उत्तम सोच।।47।।
श्री बाबू से बोल दें,
होवें नहीं हतास।
त्याग पत्र कल भेज दें,
राज्यपाल के पास।।48।।

कल ही बनवाकर यहाँ,
तुरत नयी सरकार।
तब जाऊँगा लौटकर,
मैं दिल्ली दरवार।।49।।

सुनथैं बचन पटेल के,
सिट्टी-पिट्टी गुम्म।
धमनी केरों खून सब,
ठाम्हैं लागै थुम्म।।50।।

मतलब ई नैं एकरों,
धोंस जमाना भाय।
राजनीति में निपुणता,
या समझों चतुराय।।51।।

साम्प्रदायिकता केरों,
हरपल करै विरोध।
धर्मनिरपेक्ष देश के,
सदा कराबै बोध।।52।।

साम्प्रदायिकता केरों,
पटेल ऊपर दोष।
बेईमानी ही कहों,
खोना नैं छै होश।।53।।

बापू के हत्या हुवै,
दोषी नाथू राम।
ऊ तें पूरा बिहिप में,
रहै कमैनें नाम।।54।।

सदाशिव गोलवरकरों,
कर्त्ता-धर्त्ता लोग।
पत्रकारिता भी करै,
यै में पूरा योग।।55।।

वल्लभभाई डूबलों,
चिन्ता में दिन-रात।
पत्र सदाशिव कें लिखै,
कहे मर्म के बात।।56।।

''हिन्दू का हो संगठन,
तथा मदद अभियान।
'एक बात है, कुछ नहीं
इसमें है नुकसान।।57।।

मगर निहत्थी औरतें,
जो बिल्कुल लाचार।
यहाँ दूसरी बात है,
करना अत्याचार।।58।।

यह तकरीरें विषभरा,

उसका ही परिणाम।

कुर्बानी जो कर रही,

चिन्तित आठेयाम।।59।।

पत्नी के देहान्त के,

जखनी आबै तार।

केशों में लगले रहै,

जानै छै संसार।। 60।।

विट्ठल के देहान्त पर,

जेलों में मजबूर।

मगर रिहाई शर्त कें,

नैं करलक मंजूर।। 61।।

उप प्रधानमंत्री बनै,

आजादी के बाद।

निबटाबै हर मामला,

मेटै सकल विवाद।। 62।।

कर्मठता, शालीनता,

सें भरलों व्यक्तित्व।

कौनें बांधै शब्द में,

परम उज्ज्वल कृतित्व।। 63।।

घड़ी परीक्षा के कहै,

के इन्सां, हैवान।

वक्त बताबै के कहाँ,

कतना आस्थावान।। 64।।

आजादी के आग में

कूदै वाला लोग।

उनका दुख-संताप की,

की उनका लें रोग।। 65।।

स्पष्टवादी पटेल जी,

संयम में मशगूल।

व्यक्ति वीर, दृढ़ निश्चयी,

टारै पथ के शूल।। 66।।

उनकों रहै उपाधि सब,

आधृत उनके काम।

बुद्धि-बलों पर हल करै,

बाधा-विघ्न तमाम।। 67।।

जनता मन अवहेलना,

छेकै एक मिशाल।

प्रधानमंत्री पहिलका,

वीर जवाहरलाल।। 68।।

बापू के सम्मान में,
सब कुछ करना त्याग।
कतना छेलै हृदय में,
बापू लें अनुराग।।69।।
पद आरू अधिकार के,
दुरुपयोग के बात।
नैं करना छै भूल सें,
सोच रहै दिन-रात।।70।।
कार्य कारिणी नेहरू
सें करलक मतभेद।
ई किस्सा अनटेटलों,
सुनथैं होथों खेद।।71।।
कोय पटेलों कें करै,
नेता लें लाचार।
मुस्कुराबै पटेल जी,
समझाबै हर वार।।72।।
'कांग्रेस कार्यकारिणी,
सचमुच मेरे हाथ।
लेकिन सच्चा मानिये,
देश जवाहर साथ।।73।।

जनसेवा फिर सादगी,
जीवन केरों मर्म।
यहें कर्म सरदार के,
यहें हमेशा धर्म।।74।।
बापू जी के भाव ई,
कहें सकों बहुमूल्य।
नेहरू पुत्रवत् रहै,
पटेल अनुजों तुल्य।।75।।
नेहरू पक्षपात के,
जरत्रनी आबै बात।
आँखी तर नाचें लगै,
आबी कें गुजरात।।76।।
वल्लभ भाई तें रहै,
हर कामों में दक्ष।
तइयो कमजोरे बुझै,
बापू इनकों पक्ष।।77।।
लागै छै बापू वहाँ,
होलै कुछ कमजोर।
गुजराती दोनों रहै,
लोग मचैतै शोर।।78।।

बात सही पूरक रहै,
सबके सब लें जान।
बापू अहिनों पारखी,
भारत के संतान।।79।।
जन्म या कि निर्वाण पर,
नेता बोलै बोल।
आलोचक आलोचना,
करतें खोलै पोल।।80।।
दिल्ली में संसद भवन,
हर नेता के चित्र।
पर पटेल के साथ में,
होलै बात विचित्र।।81।।
अटल बिहारी के समय,
टललै कुछ अविवेक।
लौहपुरुष सरदार के,
टँगलै फोटो एक।।82।।
जवाहरलाल नेहरू,
पटेल साथे साथ।
बापू के बनलों रहै,
बाँया-दाँया हाथ।।83।।

राजिव ऐलै ओकरों,
बादें कतना साल।
बात सुनाबै छी यहाँ,
जकरों जरा मलाल।।84।।
'भारतरत्न' उपाधि सें,
राजिव के सम्मान।
पीछू पूज्य पटेल पर,
गेलै सबके ध्यान।।85।।
बनै नेहरू जिद्द पर,
कश्मीरों के ढाल।
खैतें-पीतें रात-दिन,
हौतें रहै बबाल।।86।।
प्रधान पद जों होतियै,
पटेल केरों हाथ।
दूर समस्या होतियै,
सब्भे एक्के साथ।।87।।
आदर्शों लें जे करै,
नै ककरों परवाह।
रहै जुझारू हर समय,
कौनें पैतै थाह।।88।।

राष्ट्र प्रेम के दृष्टि में,
रहै बहुत विस्तार।
उनकों करलों काम लें,
जानै छै संसार।। 89।।

धरती हमरों धन्य दै,
माता सदा निहाल।
जकरा गोदी खेललै,
पटेल अहिनों लाल।। 90।।

❖❖❖❖❖❖❖❖

सर्ग नौ

पटेल जी अपनों भाषण में, दै जे कुछ संदेश।
वै में भरलों जनता लेली, छेलै कुछ उपदेश।।
संदेशों-उपदेशों कें सूक्ति वाक्य के रूप।
दै कें उनखै करों समर्पित, पूजा केरों धूप।।

***

अविश्वास ही भय के कारण, अविश्वास छै त्याज्य।
राज्य प्रजा के लेली हरदम, प्रजा हेतु नैं राज्य।।

***

असहयोग मर्यादा साथें, करना छेकै युद्ध।
नीति-नियम, कानून-कायदा, पालन करै प्रबुद्ध।।
असहयोग आन्दोलन कखनूँ, नैं छै अनुचित कार्य।
दोनों पक्षों लेली हरदम, समझों ई अनिवार्य।।

***

प्राणी केरों शरीर में सें, निकली जैतै प्राण।
कहलैतै अस्पृश्य तभी, पटेल के आख्यान।।
प्राण ईश के एक अंश छै, प्राणी के सम्मान।
नैं करला पर नाखुश होतै, जानी लें भगवान।।

***

आत्मदोष दर्शन आजादी लै खातिर अनिवार्य।
त्याग भावना, सहनशीलता, सब हमरा स्वीकार्य।।

***

आत्म प्रशंसा गाबी-गाबी, जे खोजै सम्मान।
तें होतै निपट अनाड़ी, ऊ होतै नादान।।

***

बिना आत्मबल काम असंभव, हमरों यहें विचार।
हम्में आत्मबलों कें मानौं, जब हमरें सरकार।।

***

माटी केरों पुतला छेकै, हमरों हाय शरीर।
पर भीतर के दिल कें कखनूँ, नैं लागै छै तीर।।
लाठी सें सिर टुकड़ा होतै, बहतै खूँ के धार।
पर दिल कें नैं छूतै कोनों, जे घातक हथियार।।
गेलों धन-संपत सब लौटै, लौटै छै घर-बार।
पर नैं गेलों इज्जत लौटै, जानै छै संसार।।

***

सम्मानों के काबिल, बाहर पावै छै सम्मान।
लेकिन पाना मुश्किल लागै, छै जहाँ जन्म-स्थान।।

***

जागृत होना महा जरूरी, जानों देश जहान।

नैं तें ठगलों जैभें हरदम, जों रहभें अनजान।

***

शिक्षा लें तों इतिहासों सें, केना देश गुलाम।
आगू सोची समझी हमरा, करना छै सब काम।।

***

अकल्प, अगम्य गति ईश्वर के, सोचों उचित उपाय।
ईश्वर पर श्रद्धा राखी लें, जीवन सफल बनाय।।

***

आपस के सब बैर भुलाबों, महा जरूरी मेल।
फूटे डाली राज करै के, सब सरकारी खेल।।
झगड़ी लीहों बात अखनकों, राखी-राखी याद।
पहिनें हमरा अंग्रेजों सें होना छै आजाद।।

***

एक अगर जों होभें सब्भे, जैतै ई सरकार।
माया-जालों में हम्में-तों, फसलों छों बेकार।।

***

ई तें सच्चा छै पानी में, डूबै तैरनहार।
बिना तैरनें सीखी जाना, भी तें छै दुश्वार।।
खाना हमरा मिलै जहाँ सें, सेवा हमरों कर्म।
लाज दूध के रखना भी तें, सब्भै केरों धर्म।।

***

जान हथेली पर लें घूमै, उनका खातिर कष्ट।
कुछ नैं रहतै ऊ वीरों के, आगू ऐथैं नष्ट।।
प्रसव-वेदना के राहत के, बाद मिलै आराम।
जुल्म मचैतै तभिये जैतैं, जुल्मी अपनों धाम।।

***

हमरों कायरता के बोझों, ढोतै जहाँ पड़ोस।
सच्चा मानों पड़ोसिया के, भागी जैतै जोश।।

***

वैर भाव आपस में रखतै, जों किसान-मजदूर।
पैदावार बढ़ै के बदला, जैतै घटी जरूर।।
दोनों के संबंध हमेशा, होतै शहद समान।
मजदूरों के बल पर चमकी, जैतै सदा किसान।।

***

आजादी खादी में मानों, खादी में कल्याण।
खादी में ही सदा चमकतै, पूरा हिन्दुस्तान।।
हम्में जे कुछ करनें छीयै, मुस्तैदी के साथ।
वै कामों में सदा रहै छै, सदा खुदा के हाथ।।
हम्में-तों इन्सान बनै छी, बस खाली हथियार।
ईश्वर-अल्ला केरों बल पर, सदा चलै संसार।।

***

खाली खेती के बल पर जे, करतै गुजर किसान।
संभव हमरा नैं लागै छै, जीना भी आसान।।
गृह-उद्योगो महा जरूरी, होना चाही चाह।
उद्योगों सें बढ़िया होतै, जीयै केरों राह।।
अन्नों के दाता किसान छों, तों छों बड़ा पवित्र।
तों दुनिया में छीटै वाला, मेहनतों के इत्र।।

***

काम बिना तोरों नैं चलतै, दुनिया मलतै हाथ।
जमीन्दार कें बड़ा जरूरी, होना तोरों साथ।।
एक विषय के प्राप्त करै जे, पूरा-पूरा ज्ञान।
उनखै मानों ई धरती पर, हरदम सफल किसान।।
बाँकी विषय अपूर्ण रहें तें, तइयो चलतै काम।
हाथ-पैर, मस्तिष्क चलाबों, खूब चुवाबों घाम।।

***

पुस्तक एक्को जे नैं पढ़तै, तइयो बुद्धि विकास।
सच्चरित्र पढुआ ही खाली, यै पर नैं विश्वास।।
विद्या वाला भोग-विलासी, आरू चरित्रवान।
मगर उद्यमी चरित्रवाने, हमरों ई अनुमान।।

***

अगर कभी नैं सहनें छों तों, दुक्खों केरों भार।
तोरा खातिर सुख असंभव, तों पड़भें मझधार।।

अगर सुक्ख आबी भी जैथों, जैथों जल्दी छोड़।
पकड़ी राखों पर नैं रहथों, भागै बाँह मरोड़।।

***

सत्ताधीशों केरों सत्ता, जैतै मरला साथ।
देश भक्त कें मरला वादे, सत्ता आबै हाथ।।
देश भक्त कें याद करै छै, मरला पर ही लोग।
देशभक्त के देशभक्ति ही, छेकै जप-तप-योग।।

***

दूरदर्शिता बुद्धिमान कें, रखना चाही साथ।
भविष्य सोची सब कामों में, देना चाही हाथ।।

***

देशों के सेवा करला में, हरदम मिलै मिठास।
ऊ मिठास कोनों चीजों में, नहियें मिलथों खास।।
हमरा साथें नैतिक बल छै, ईश्वर केरों साथ।
सदा शराफत सें स्वतंत्रता, ऐतै हमरा हाथ।।
सदा प्रतिज्ञा केरों महिमा, हमरा देशें व्याप्त।
अखनी वहीं स्वराज्य दिलैतै, जे छै वै में आप्त।।

***

जें आजादी लेली लड़तै, उनके बढ़िया काम।
उनके ऐतै इतिहासों के, पन्ना में भी नाम।।

***

हिन्दू-मुस्लिम हिन्दुस्तानी, सबके हिन्दुस्तान।
रोक जरा नैं जकरा जाना, अखनी पाकिस्तान।।
जल्दीबाजी ऐ में जानों, जरा देर नैं ठीक।
दोनों के उज्ज्वल भविष्य अब, ऐलों छै नजदीक।।

***

सच्चा बलिदानों में चिन्ता, करना छै बेकार।
ई मौका भी नैं जीवन में, आबै बारम्बार।।

***

बहुत गरम या ठंठा भोजन, दोनों में नुकसान।
दाँत सफाई पर भी देना, चाही सबकें ध्यान।।

***

सदा वकीलों सें बढ़िया छै, अखनी भी यमराज।
भगवानों के नाम अदालत में झूठा सब काज।।
सरकार जंगली हाथी रं, राखै अपनों चाल।
जे चपेट में ऐतै कखनूँ, ऊ होतै बेहाल।।
पर ऊ भी भयभीत रहै छै, चींटी सें हर वक्त।
छोटें भी तें बड़ा-बड़ा कें, सजा करै छै सख्त।।

***

साम्यवाद आरू विवाद पर, अखनी नैं दें ध्यान।
मौका मिलतै सब वादों कें, करबै सब पहचान।।

***

चिल्लाबै वाला सें संभव, नैं छै कुछ विद्रोह।
बगावती तें मूकबनी कें, लै छै सब के टोह।।
वरदी वाला कें नैं चाही, करना कुछ अभियान।
सेवा, आदर ही तें छेकै, सेवा के पहचान।।

***

शराबबंदी हिन्दू-मुस्लिम, दोनों केरों धर्म।
छोटों-मोटों आमदनी लें, महापाप छै कर्म।
स्वास्थ्य अगर अच्छा नैं रहथों, दुख के नैं छों पार।
तोरा तें लें कें चलना छों, पूरा ही परिवार।।

***

आपस केरों वैरभाव सब, छोड़ों छूत-अछूत।
एक बाप के छेकौं हम्में, सब्भे यहाँ सपूत।।
पंचायत सें झगड़ा मेटों, बैठी गाछी छाँव।
मजा स्वराज्यों केरों ऐथों, तखनी तोरों गाँव।।

***

राज्यों केरों जूआ फेंकों, एक जूट सब होय।
स्वराज्य नैं ऊपर सें टपकै, जानी लें सब कोय।।

***

उद्देश्य राष्ट्रीय शिक्षा के, वापस लौटों ग्राम।
गाड़ी जोतों खुरपी पकड़ों, खूब चुवाबों घाम।।

***

परिशिष्ट (31 अक्टूबर 1918)

दू हजार अठारह ईस्वी, अक्टूबर इकतीस।
महत्त्वपूर्ण बनाबै तिथि कें, परम पिता जगदीश।।
छिकै एक सौ चौवालिसवाँ, शुभ्र जयन्ती आज।
लौह पुरुष पटेल के जकरा ऊपर जग कें नाज।।
लौह पुरुष के कद के माफिक, प्रतिमा के निर्माण।
अनावरण होलों छै आजे, जानै सकल जहान।।
एक सौ तिरपन मीटरों के, भव्य मूर्त्ति छै बुद्ध।
जे चीनों के गौरव छेकै, बताबै छै प्रबुद्ध।।
बढ़ै ओकरा पीछू छोड़ी, जगत् प्रसिद्ध पटेल।
उनतीसे मीटर छै बेशी, जकरों नैं छै मेल।।
साठ मंजिला बनै इमारत, जतना उच्चों भाय।
उतना उच्चों लौह पुरुष के, प्रतिमा बनलै आय।
'स्टैच्यू ऑफ यूनिटी' केरों, पदवी जिनकों भाल।
उनकों प्रतिमा लागै ओन्हैं, अनुपम महाविशाल।।
विधान सभा सदस्यों केरों, संख्या जे गुजरात।
उतने मीटर उच्चों प्रतिमा, बड्डी बढ़िया बात।।
यहें एक सौ बेरासी के, छेकै जानों राज।
सत्तर हजार टन सिमेंटों, में होलै सब काज।।
बाईस हजार पाँच सौ टन, ताम्बा इस्तेमाल।

ढाई सौ इंजीनियर करै, मोर्चा के संभाल।।
तीन हजार चार सौ यैमेॅ, लगलै कुल मजदूर।
छियालीस महीना करलकै, श्रम सब्मैं भरपूर।।
दू हजार नौ सौ नब्बासी, करोड़ खर्चा ज्ञात।
दुनिया केरोॅ चीज अजूबा, बनलै सच्ची बात।।
लेजर लाइटिंग प्रतिमा मेॅ, लगलोॅ छै दू लिफ्ट।
प्रतिमा के सीना तक जैभेॅ, बड़ा भव्य ई गिफ्ट।।
लिखने जाय छी कृति अनूठा, नैं पाबै छी थाह।
दुनिया आबोॅ दर्शन लेली, 'हरेन्द्र' के ई चाह।।

संदर्भः-

1. दूरदर्शन सें प्राप्त जीवनी, व्यक्तित्व और कृतित्व
2. सरदार बल्लभभाई पटेल, लेखक विनोद तिवारी
   मनोज पब्लिकेशन, शाहदरा (दिल्ली)
3. लौहपुरुष सरदार बल्लभ भाई पटेल
   संकलनकर्ता-चारू सपरा (साधना पॉकेट बुक्स, दिल्ली)
4. हिन्द के सरदार, लेखक राजीवभाई पटेल
   नवजीवन प्रकाशन मंदिर, अहमदाबाद
5. जन्म दिवस पर छपलोॅ अखबार के कतरन।
6. लौह पुरुष सरदार बल्लभ भाई पटेल।
   सुनील कपुर, प्रभात प्रकाशन, नई दिल्ली।
7. सरदार
   राजेन्द्र मोहन भटनागर, राजपाल
   एण्ड सन्स, कश्मीरी गेट, दिल्ली-6

(समाप्त)

हीरा प्रसाद 'हरेन्द्र' : एक परिचय

जन्म : 06/09 /1950, कटहरा, सुलतानगंज, (भागलपुर)

सम्मान/पुरस्कार/उपाधि :

1. डॉ0 अम्बेदकर फेलोशिप, राष्ट्रीय सम्मान (05/12/2001)
   (दलित साहित्य अकादमी, दिल्ली)
2. खूब लाल महतो स्मृति पुरस्कार (उत्तंग हमरॉ अंग लेली)
   (अ0 भा0 अंगिका साहित्य कला मंच) (09/06/2001)
3. जगदीश पाठक मधुकर– कुल विभाकर (05/05/2002)
   (समय साहित्य सम्मेलन, पुनसिया, बाँका)
4. इन्दिरा देवी स्मृति सम्मान (12/08/2003) (बरियारपुर, मुंगेर)
5. जनार्दन बाबू रजत स्मृति सम्मान (08-09/11/2003)
   (अ0भा0 अंगिका साहित्य कला मंच, खगड़िया)
6. पंडित गोपी नाथ तिवारी पुरस्कार (25/12/2005)
   जाह्नवी अंगिका संस्कृति संस्थान, पटना
7. सरला स्मृति साहित्यकार सम्मान (अंगप्रिया के सफल सम्पादन लेली)
   जानकीपुर पबई (बाँका) (09/12/2007)
8. गोपाल प्रसाद सिंह सेवा निवृत प्र0 अ0 स्मृति सम्मान
   (बाबा दूबे भयहरण स्थान सलेमपुर, अमरपुर (बाँका) 8 मार्च 2008)
9. भारतेन्दु हरिश्चन्द्र रजत स्मृति सम्मान ('ठकहरा' लेली) (15/06/2008)
   (हिन्दी भाषा साहित्य परिषद्, खगड़िया)
10. पंडित जगदीश पाठक मधुकर, काव्य साहित्य साधना स्मृति सम्मान
    (भागलपुर प्रमण्डलीय अ0भारतीय भाषा साहित्य सम्मेलन)
11. स्व0 वैकुण्ठ विहारी स्मृति सम्मान (तारापुर, मुंगेर)
12. राहुल सांकृत्यायण स्मृति सम्मान (21 फरवरी2010)
    अन्तर्राज्य सद्भावना बहु-भाषी काव्योत्सव, उधाडीह, भागलपुर
13. आदिकवि सरहपा स्मृति सम्मान (11 अप्रैल 2010)
    अ.भा. अंगिका साहित्य कला मंच सरहपापुरम्, कहलगाँव
14. जय प्रकाश मोदी स्मृति साहित्य सम्मान (14 मार्च 2011) खड़गपुर
15. हास्य शिरोमणि सम्मान। 9.5.13 महादेवपुर (अमरपुर, बाँका)
16. भगीरथ बाबा अंग साहित्य सम्मान। 01.02.2014
    अखिल भारतीय अंगिका साहित्य विकास समिति।
17. माहताब अली रजत स्मृति सम्मान। 30.03.2014
    भावांजलि लेली, हिन्दी भाषा साहित्य परिषद् खगड़िया।

18. उमानाथ पाठक स्मृति सम्मान, सुलतानगंज।

ooo

1. कवि रत्न (विक्रमशिला हिन्दी विद्यापीठ)
2. अंग श्री (अ0 भा0 भाषा साहित्य सम्मेलन प्रमंडलीय शाखा, भागलपुर)
3. अंग श्री (क्षेत्रीय सर्वभाषा कवि सम्मेलन, खड़िया, मुंगेर)
4. साहित्य श्री (अ0 भा0 भाषा साहित्य सम्मेलन, भोपाल)
5. साहित्य रत्न (मंगनी लाल स्मृति ट्रस्ट, बौंसी, बाँका)
6. अंग शिरोमणि (राज्य स्तरीय सर्व भाषा सद्भावना काव्योत्सव, उधाडीह, भागलपुर)
7. कवि शिरोमणि (विक्रमशिला हिन्दी विद्यापीठ, गाँधीनगर, ईशीपुर, भागलपुर)
8. पंचशील शिरोमणि (पंचशील चैरिटेबुल सोसायटी, 25/4 कड़कड दुम्म एरिया, सेंट्रल बैंक के ऊपर, नई दिल्ली 110092–भारत)
9. अंग–पतंग (अ0भा0 अंगिका साहित्य सम्मेलन, जिला शखा–भागलपुर)
10. अंगिका सपूत (अ0भा0 अंगिका साहित्य कला मंच प्रखण्ड शाखा–शंभुगंज)
11. महाकवि (विक्रमशिला हिन्दी विद्यापीठ एवं गुरुदेव रामलषण सिंह द्वारा)

प्रशस्ति पत्र (ढेर साहित्यिक संस्थाओं द्वारा)

देश–विदेश के स्तरीय पत्रिकाओं में रचना प्रकाशित और आकाशवाणी भागलपुर तथा दूरदर्शन पटना से अंगिका और हिन्दी रचना संप्रसारित

❖ शैली–विसंगति में हास्य खोज कर व्यंग्य प्रहार करना।

महामंत्री–अखिला भारतीय अंगिका साहित्य कला मंच।

सम्प्रति – सम्पादक – मंजिल / अंगप्रिया / देवायतन

सम्पर्क – ग्राम+पो0–कटहरा, सुलतानगंज (भागलपुर)–813213

मो0–**9931854246**